पु॰ना International School

Shree Swaminarayan Gurukul, Zundal

Class –VII

HINDI

Year- 2020-21

कविता 1 - हम पंछी उन्मुक्त गगन के

कवि- शिवमंगल सिंह 'सुमन'

प्रसंगः प्रस्तुत कविता हमारी पाठपुस्तक वसंत भाग 2 से ली गई है जो शिव मंगल सिंह सुमन द्वारा रचित है।

व्याख्याः हम पंछी उन्ममक्त गगन के कविता में कवि ने आज़ादी की महत्ता को प्रस्तुत किया गया है। कवि ने गलामी की अपेक्षा आज़ादी को श्रेष्ठ मानमे हुए पक्षियों की वाणी के माध्यम से इसे अपने भावों का आधार बनाया है।खुले आसमान में उड़त हुए आज़ाद पक्षी ही चहचहाते हैं। यदि उन्हें पिंजरे में बंद कर दिया जाए तो वे बंदी अवस्था में नहीं गाते। सोने के पिंजरे में भी यदि उन्हें बंद किया जाए तो भी वे मुक्त होने के लिए उसकी तीलियों से टकरा-टकरा कर अपने पंख तोड़ लेते हैं। उन्हें तो बहता जल और नीम का फल अच्छा लगता है पिंजरे में रहकर उनके लिए खुला आसमान बहता पानी,पेड़ की डाल सब कुछ सपना हो जाता है। उन्हें किसी सेर कुछ नहीं चाहिए ।यदि भगवान ने उन्हें बाँधकर नहीं रखना चाहिए। उन्हें विचरण करने के लिए खुले आसमान में छोड़ देना चाहिए।

विशेष :भाषा सरल और सहज है।

शब्दार्थ

1 पंछी - पक्षी

2 उन्मुक्त - खुले

3 कनक - सोना

4 कटुक - कड़वा

5 निबैरी - नीम का फल

6 तरू - पेड़

7 फुनगी - पेड़ का सबसे ऊपरी भाग

8 अरमान -इच्छाएँ

9 क्षितिज - जहाँ धरती और आकाश मिलते हुए नज़र आते हो

10 होड़ा- होड़ी- मुकाबला

11 नीड़ -घोसला

12 आश्रय -सहारा

13 छिन्न-भिन्न - तहस नहस करना

14 विघ्न - बाधा

15 पंख - पर

16 तारक- तारे

17 सीमाहीन-जिसकी कोई सीमा ना हो

18 स्वर्ण श्रंखला- सोने का बना बर्तन

19 बंधन - गुलामी

20 पलकित -खुशी से फड़फड़ाते

साहित्यक -विभाग

अतिलघु उत्तर

1 कनक-कटोरी का मैदा किसका प्रतीक है?

उत्तरः पराधीन जीवन का

2 कवि और कविता का नाम लिखिए।

उत्तरः कवि का नाम- शिवमंगल सिंह 'सुमन'

कविता का नाम- हम पंछी उनमुक्त गगन के

3 पक्षियोंके क्या अरमान क्या थे?

उत्तरः खुले आकाश में दूर-दूर तक उड़ना।

4 पक्षियोंके पिंजरे मेंकैसी तीलियाँ लगी हैं?

उत्तरः सोने की

लघु उत्तर

1 पक्षी उन्मुक्त गगन में उड़ने के लिए क्या-क्या त्यागने को तैयार है?

उत्तरः पक्षियों को स्वतंत्रता अत्याधिक प्रिय है। वे स्वतंत्रता को बनाए रखने के लिए अपना घोंसला, पेडों की डालियों का सहारा तथा पिंजरे में कनक कटोरी में रखा मैदा तथा मनुष्य द्वारा दी जाने वाली सुविधाएँ त्यागने को तैयार हैं।

2 पिंजरे मेंबंद पक्षी खुश क्यों नहींहै?

उत्तरःपिंजरे में बंद पक्षियोंकी आज़ादी छिन चुकी है। पिंजरे मेंवे अपनी इच्छानुसार घूम-फिर नहीं सकते हैं न अपने पंख को खोल सकते हैं वे नदी-झरनों का बहता जल पीने और जंगल के फल खाने को तरस गए है।

3 पक्षी हम मनुष्योंसे क्या प्रार्थना करते हैं?

उत्तरः पक्षी हम मनुष्यों से यह प्रार्थना करते हैं कि हम मनुष्य उसके घोंसलों और आश्रय को भले ही नष्ट कर दें पर इेसा कोई कार्य न करें जिससे उनकी उन्मुक्त उड़ान में कोई बाधा आए और उनकी स्वतंत्रता का हनन न हो।

दीर्घ उत्तरः

1 हम पंछी उनमुक्त गगन के कविता से पक्षियों की किन स्वाभाविक विशेषताओं का पता चलता है?

उत्तरः पक्षियों के अनेक स्वभाव के बारे में पता चलता है जैसे कि उनको आज़ादी बहुत प्रिय है। इसफले पाने के लिए वे पिंजरे से बाहर आने का निरंतर प्रयास करते रहते हैं, भले ही पिंजरे स टकराकर उनके पंख टूट जाएँ।

पक्षी बहता जल पीने वाले और स्वतंत्र रहकर कड़वे फल खाकर भी खुश रहने वाले होते हें।

2 हम पंछी उन्मुक्त गगन के कविता किन मानवीय मूल्यों को उभारने में सहायक है?

उत्तर :1 अपनी स्वतंत्रता बनाए रखने का प्रयास करना चाहिए।

2 पशु-पक्षियों की स्वतंत्रता का हनन नहीं करना चाहिए।

3 पेड़-पौधे और अपने पर्यावरण की रक्षा करनी चाहिए।

4 जीव-जंतु के प्रति दयावान बनना चाहिए।

व्याकरण

प्रः1 भाषा किसे कहते है?

उः भाषा वह साधन है जिसके माध्यम से मनुष्य अपने मन के भावों एवं विचारोंका आदान -प्रदान करता है।

पः2भाषा के कितने रूप है? कौन-कौन से?

उः भाषा के दो रूप है

मौखिक ,लिखित

प्रः3बोली किसे कहते है?

उः किसी प्रांत के सबसे छोटे-से क्षेत्र में बोली जाती है। इसमें साहित्यक रचनाएँ नहीं होतीं।

प्रः4 लिपि किसे कहते है?

उः भाषा की मौखिक ध्वनियों का जिन चिहनों के दवारा लिखा जाता है, उन्हें लिपि कहते है।

प्रः5 व्याकरण किसे कहते है?

उः वह शास्त्र, जिससे भाषा के शुदध रूप और प्रयोग का ज्ञान होता है, उसे व्याकरण कहते है।

लेखन - बोध

ग्रीष्म ऋतु (गरमी की ऋतु) पर निबन्ध ।

मौसम कभी भी एक जैसा नहीं रहता है । यह परिवर्तित होता रहता है । मौसम के साथ-साथ ऋतुएँ भी बदलती हैं । शीत ऋतु के बाद बसंत की सुहानी ऋतु आती है ।

बसंत ऋतु के बाद प्रचंड गरमी की ऋतु ग्रीष्म ऋतु आती है । हालाँकि कुछ हद तक यह कष्टदायक ऋतु है परंतु इस ऋतु का भी अपना एक आनंद, एक अलग सौंदर्य है । ग्रीष्म ऋतु अप्रैल माह से आरंभ होकर जून-जुलाई तक चलती है । इस ऋतु में पर्णपाती वृक्षों की पत्तियाँ गिर जाती हैं ।

इसलिए इसे पतझड़ ऋतु भी कहते हैं । गरमी इतनी पड़ती है कि दोपहर में घर से निकलना कठिन हो जाता है । जैसे-जैसे दिन अत्मे बढ़ता है प्रखर सूर्य रश्मियों क्य प्रकोप बढ़ता जाता है । दोपहर के तीन-चार घंटे बड़े कष्टदायक प्रतीत होते हैं । लोग घर से बाहर सिर पर टोपी, पगड़ी डालकर या छाता लेकर निकलते हैं ।

ठंडे पेय पदार्थ, लस्सी, शरबत आदि अत्यंत प्रिय लगते हैं । इस ऋतु में आम, लीची, खीरा, ककड़ी आदि फल-सब्जियाँ तृप्तिदायक होती हैं । ग्रीष्म ऋतु को गरीबों की ऋतु कहा जाता है क्योंकि इस ऋतु में बहुत कम वस्त्रों से भी काम चल जाता है ।

इस ऋतु में सूती वस्त्र बहुत उपयोगी होते हैं जो हमें लू के थपेड़ों से बचाते हैं । कभी-कभी आँधी तूफान भी आते हैं और धूल-भरी हवाएँ आसमान में छा जाती हैं । आसमान लोहित हो जाता है । पर जब वायु जरा भी हिलती-दुलती नहीं तो उमस बढ़ जाती है ।

ग्रीष्म ऋतु में जल का महत्त्व बढ़ जाता है । प्यासे लोग, प्यासी भूमि, प्यासे पशु-पक्षी और झुलसे हुए पेड़-पौधे सभी जल की माँग करते हैं । धन्य है वह किसान जो इस ऋतु में भी फसलों की सिंचाई करता है । वे स्त्रियाँ भी धन्य हैं जो मटके लेकर मीलों जल भरने जाती हैं । सरोवर ताल-तलैया, कुएँ, बावड़ियों, झील, नदियाँ सभी इस ऋतु में सूखने लगती हैं ।

स्वाध्यायः पक्षियों पर आधारित एक कविता लिखिए।

गतिविधिः पक्षियों का चित्र चिपकाकर उन पर सात वाक्य लिखिए।

पाठ 2 दादी माँ
लेखक :शिवप्रसाद सिंह

शब्दार्थ

1 कठिनाई -मुशिकल

2 शुभचिंतक - भला चाहने वाले

3 चैत- अप्रैल

4 विचित्र- अजीब

5 लवंग- लौंग

6 अनुमान- अंदाजा

7 विलंब- देरी

8 हाथापाई- झगड़ा, लड़ाई, हाथ चलाना

9 वंश- कुल

10 चारपाई- खाट

11 संदूक - लोहे की पेटी

12 शीत- ठंडी

13 अभयदान -शरण देना

14 धोती- साड़ी

15 ज्वर- बुखार

16 अनमना -उदास

17 प्रतिकूलता- विपरीत स्थिति

18 दालचीनी -एक मसाला

19 वात्याचक्र - घटनाक्रम

20 निस्तार -उद्धार

साहित्य-विभाग

अतिलघु उत्तरः

1 लेखक अपनी कमजोरी किसे मानता है?

उत्तरः लेखक बीस वर्ष का था, फिर भी जरा-सी मुश्किल आने पर वह घबरा जाता था।

2 लेखक भीतर-ही भीतर हुड़क रहा था, क्यों?

उत्तरः लेखक को अनय बच्चों की तरह तालाब के झाग भरे पानी में नहाना पसंद था, पर ज्वर के कारण वह नहा न सका।

3 लेखक की उम्र कितनी लगती है?

उत्तरः बीस साल से अधिक

4 दादी जी के आँचल की गाँठ में क्या बँधा था?

उत्तरः मिटटी

लघु उत्तरः

1 दादी मैं ने अपने परिवार की आर्थिक स्थाति खराब होने पर किस तरह मदद की?

उत्तरः लेखक के परिवार की आर्थिक स्थिति इतनी खराब हो चुकी थी कि कोई भी

उधार देने को तैयार न था ऐसे में दादी माँ ने अपने पति और कुल की निशानी कंगन निकालकर दे दिए, ताकि उसे बेचकर घर का खर्च चलाया जा सके।इस प्रकार उन्होंने खराब आर्थिक स्थिति में परिवार की मदद की।

2 दादी माँ बीमारियोंका अनुमान और इलाज कैसे कर लेती थीं?

उत्तरः दादी माँ अत्यंत अनुभवी महिला थीं । वह हाथ,पेट और माथा छूकर बुखार,मलेरिया,सरसाम और निमोनिया जैसीबीमारियों का अनुमान लगा लेती थीं।वह इन बीमारियों का इलाज लौंग गुड मिश्रित जल, गुगल और धूप से करती थीं।

3 लेखक के मित्रोंका स्वभाव आपकी दृष्टि मेंकैसा था?

उत्तरः लेखक को जरा-सी बात पर परेशान होता देख उसके मित्र उसे खुश करने का प्रयास करते और आने वाली छुटिटयों की सूचना देते,पर पीठ पीछे प्रतिकूलता से घबराने वाला कहकर उसका मजाक उड़ाते थे। इस तरह का व्यवहार उचित नहीं है।

दीर्घ उत्तर

1 क्वार के महीने मेंवातावरण में आए बदलावोंका वर्णन पाठ के आधार पर कीजिए-

उत्तरः दादी माँ पाठ से ज्ञात होता है कि क्वार के महीने में तालाब में लबालब पानी भरा होता है। इस पानी में दूर-दराज के क्षेत्रों से बहकर आई जंगली घासें , मोथा,थेऊर और बनप्याज की जड़ें, अधगली घासे, बरसाती घासों के बीज आदि सूरज की गर्मी से सड़कर वातावरण में विचित्र गंध पैदा करती हैं।तालाब के इस झाग भरे पानी में बच्चों को प्रसन्नता से कूदते और नहाते देखा जा सकता है।

2 ' दादी माँ' पाठ के आधार पर दादी का चरित्र चित्रण कीजिए-

उत्तरः 1 ममतामयी महिलाः दादी अत्यंत ममतामयी थीं।वह ापने परिवार के अलावा दूसरों पर भी महत्व बनाए रखती थीं।

2 धार्मिक महिलाः दादी आस्तिक थीं। दुख की घड़ी में आँखे बंद कर पूजा-अर्चना एवं चिंतन करती थीं।

3 परोपकारिणीः दादी दूसरों की मदद करने में सदैव आगे रहती थीं। उन्होंने रामी की चाची का कर्ज माफकर उसकी बेटी की शादी के लिए रुपये भी दिए।

4 गहन सेवा भावनाः दादी के मन में सेवा-भावप्रगाढ था।वह दूसरोंकीबीमारी मेंउनकी सेवा के लिए उनके घर पहुँच जाया करतीथीं।

3 दादी माँ के लिए कंगन इतने महत्वपूर्ण क्यों थे?

उत्तरः दादी माँ के लिए उनका परिवार बहुत महत्व रखता था। परिस्थितियों वात्याचक्र के कारण उनका परिवार आर्थिक संकट में पडता गया, फिर भीउन्होंने इन संकटों का मुकाबला किया और अपने कंगनों को संभाले रखा। इन कंगनों के साथ दादी की आस्था एवं भावना जुड़ी थी।यह कंगन दादा जी वंश की निशानी थे, जिन्हें दादी ने पहनने के बजाय सँभाल कर रखा था। यह कंगन उन्हें दादा जी ने दिए थे, जो अब इस दुनिया में नहीं रहे। ऐसे में दादी के लिए वे कंगन बहुत महत्वपूर्ण थे।

संज्ञा की परिभाषाः

संज्ञा का शाब्दिक अर्थ होता है ळ नाम।किसी व्यक्ति ,गुण, प्राणी, व्जाति, स्थान , वस्तु, क्रिया और भाव आदि के नाम को संज्ञा कहते हैं

संज्ञा के भेद

ऋं जाति वाचक संज्ञा

धं भाववाचक संज्ञा

टं व्यक्तिवाचक संज्ञा

थंसमूहवाचक संज्ञा

त्रं द्रव्यवाचक संज्ञा

ऋं जातिवाचक संज्ञा :– जिस शब्द से एक ही जाति के अनेक प्राणियों , वस्तुओं का बोध हो उसे जातिवाचक संज्ञा कहते हैं

उदहारण :– मोटरसाइकिल, कार, टीवी, पहाड़, तालाब, गॉव, लड़का, लडकी, घोडा, शेर।

धं भाववाचक संज्ञा :– जिस संज्ञा शब्द से किसी के गुण, दोष, दशा, स्वाभाव , भाव आदि का बोध हो वहाँ पर भाववाचक संज्ञा कहते हैं।

उदहारणः– गर्मी, सर्दी, मिठास, खटास, हरियाली, सुख।ळ

टं व्यक्तिवाचक संज्ञा :– जिस शब्द से किसी एक विशेष व्यक्ति , वस्तु, या स्थान आदि का बोध हो उसे व्यक्तिवाचक संज्ञा कहतेहैं।

उदहारण :– भारत, गोवा, दिल्ली, भारत, महात्मा गाँधी , कल्पना चावला , महेंद्रसिंह धोनी , रामायण , गीता, रामचरित मानस आदि।

लेखन –विभाग

अपने क्षेत्र में बिजली संकट से उत्पन्न परेशानियों को दूर करने के लिए विद्युत विभाग को पत्र लिखिए–

सेवा में महाप्रबंधक,

दिल्ली विद्युत बोर्ड,

नई दिल्ली।

महोदय,

मैं आपका ध्यान मंगलपुरी क्षेत्र में व्याप्त बिजली संकट की ओर आकर्षित करना चाहता हूँ। इस क्षेत्र में बिना पूर्व सूचना के कई-कई घंटे तक बिजली गायब रहती है। इससे हम लोग बहुत परेशान हैं खास कर विद्यार्थियों का विशेष परेशानी हो रही है। आजकल हमारी परीक्षाएँ चल रही हैं हम लोग ठीक से पढ़ाई नहीं कर पा रहे हैं। बिजली संकट के कारण पानी का संकट भी खड़ा हो गया है।

धन्यवाद सहित,

भवदीय

राकेश दवे

दिनांक 24 अप्रैल

स्वाध्यायः दादी पर एक अनुच्छेद लिखिए।

गतिविधिः दादी तथा नानी का फोटो लगाइए।

बाल महाभारत

पाठ 1 से 5

शब्दार्थ

1 मोह लेना- आकर्षित करना

2 क्षोभ - क्रोध

3 अभिनय - नाटक

4 भोग -विलाश - मौजमस्ती

5 घृणित - नफरत करने योग्य

6 नवयोवन - युवावस्था

7 विरक्त - सांसारिक लगाव से मुक्त

8 प्रफुल्लित - प्रसन्न

9 वियोग - बिछड़ना

10 उदविग्न - परेशान

11 कुशाग्रबद्धि - तेज दिमाग वाला

12 स्वेछाचारी - मनमानी करने वाला

13 जितेंद्रिय - जिसने इंद्रियों को जीत लिया है

14 वीरोचित - वीरोंके अनुरूप

15 कोख - गर्भ

16 कुचाल - षडयंत्र

17 कीत्ति - यश

18 लालसा - इच्छा

प्रश्नों के उत्तरः

1 किसने राजा शांतनु को मोह लिया

उत्तरः गंगा ने

2 गंगा ने सातो बच्चों का क्या किया?

उत्तरः सातों बच्चों को गंगा ने नदी की धारा में फेक दिया।

3 केवटराज ने राजा शांतनु से क्या वचन माँगा?

उत्तरः आपके बाद हस्तिनापुर के राज-सिंहासन पर मेरी लड़की का पुत्र बैठेगा।

4 किसने आजन्म बाह्चारी रखने की प्रतिज्ञा ली?

उत्तरः देवव्रत ने

5 शांतनु के बाद कौन हस्तिना पर के सिंहासन पर बैठा?

उत्तरःचित्रांगद

6 चित्रांगद कैसा था?

उत्तरः वीर परंतु स्वेच्छाचारी

7 धर्मदेव आगे चलकर किस नाम से प्रसिद्ध हुआ?

उत्तरः विदुर

8 कुंती का विवाह किसके साथ हुआ?

उत्तरः राजा पांडु के साथ।

पाठ-3 हिमालय की बेटियाँ
लेखक : नागार्जुन

शब्दार्थ

1 विशाल- बड़ा

2 खिलखिलाकर- जोर-जोर से

3 कौतूहल- जिज्ञासा

4 घाटी-पर्वतोंके बीच की भूमि

5 आकर्षक- अपनी ओर खीचनें वला

6 वास्तव- हकीकत

7 प्रेयसी-प्रेमिका

8 तबियत -सेहत

9 विराट- बड़ा

10 सिर धुनना- शोक के कारण बहुत दुखी होना

11 बालिका- छोटी लड़किया

12 झिझक- संकोच

13 संभ्रात- शिष्ट

14 अधित्यकाएँ- पहाड़ के ऊपर की समतल जमीन

15 नटी - नर्तकी

16 प्रतिपादन -लौटाना

17 मुदित -प्रसन्न

अतिलघु प्रश्न

1 लेखक ने हिमालय की बेटियाँ किन्हें कहा है?

उत्तरः लेखक ने हिमालय की बेटियाँ हिमालय से निकलने वाली नादियों को कहा है।

2 मैदानी भागोंमेंनदियाँ कैसी दिखती है?

उत्तरः मैदानी भागों में नदियाँ बड़ी गंभीर ,शांत और अपने में खोई हुई लगती हैं।

3 हिमालय के जंगल में मुख्यतया कौन-कौन से वृक्ष पाए जाते हैं?

उत्तरः हिमालय के जंगलों में देवदार ,चीड़ सरो, चिनार,सफेदा, कैल आदि वृक्ष पाए जाते हैं।

4 सतलज के प्रगतिशील जल ने लेखक पर क्या असर डाला?

उत्तरःलेखक ने जब सतलज नदी के जल में अपने पैर लटकाए, तो उसकी थकान, उदासी तथा तबीयत का ढीलापन जाता रहा और वह प्रसन्न हो गया।

लघु प्रश्नः

1 लेखक नदियों के प्रति किस प्रकार के भाव रखता है?

उत्तरः लेखक अपने दिल में नदियों क प्रति आदर और श्रद्धा का भाव रखता है। ये नदियाँ उसे किसी संभ्रात महिला की तरह तरह उनकी धाशांत और गंभीर लगती थीं। लेखक इनमें आत्मीय लगाव भी रखता था। वह माँ,,दादी,,मौसी और मामी की गोद की तरह उनकी धारा में डुबकी लगाकर प्रेमानुभूति करता था।

2नदियों को माँ मानने की परंपरा हमारे यहाँ काफ़ी पुरानी है। लेकिन लेखक नागार्जुन उन्हें और किन रूपों में देखते हैं **?**

लेखक नदियों को माँ मानने की परपंरा से पहले इन नदियों को स्त्री के सभी रूपों में देखता है जिसमें वो उसे बेटी के समान प्रतीत होती है। इसलिए तो लेखक नदियों को हिमालय की बेटी कहता है। कभी वह इन्हें प्रेयसी की भांति प्रेममयी कहता है**,** जिस तरह से एक प्रेयसी अपने प्रियतम से मिलने के लिए आतुर है उसी तरह ये नदियाँ सागर से मिलने को आतुर होती हैं**,** तो कभी लेखक को उसमें ममता के स्वरूप में बहन के समान प्रतीत होती है जिसके सम्मान में वो हमेशा हाथ जोड़े शीश झुकाए खड़ा रहता है।

ख़ुसतानि धः

ट सिंधु और ब्रह्मपुत्र की क्या विशेषताएँ बताई गई हैं **?**

इनकी विशेषताएँ इस प्रकार हैः–

क्षज्ञि सिंधु और ब्रह्मपुत्र ये दोनों ही महानदी हैं।

क्षज्ञि इन दोनों महानदियों में सारी नदियों का संगम होता है।

क्षज्ञि ये भौगोलिक व प्राकृतिक दृष्टि से बहुत महत्वपूर्ण नदियाँ हैं। ये डेल्टाफार्म करने के लिए, मत्सय पालन, चावल की फसल व जल स्रोत का उत्तम साधन है।

क्षविज्ञ ये दोनों ही पौराणिक नदियों के रूप में विशेष पूज्यनीय व महत्वपूर्ण हैं।

दीर्घ प्रश्न

l काका कालेलकर ने नदियों को लोकमाता क्यों कहा है **?**

नदियों को लोकमाता कहने के पीछे काका कालेलकर का नदियों के प्रति सम्मान है। क्योंकि ये नदियाँ हमारा आरम्भिक काल से ही माँ की भांति भरण–
पोषण करती आ रही है। ये हमें पीने के लिए पानी देती है तो दूसरी तरफ इसके द्वारा लाई गई ऊपजाऊ मिट्टी खेती के लिए बहुत उपयोगी होती है। ये मछली पालन में भी बहुत उपयोगी है अर्थात् ये नदियाँ सदियों से हमारी जीविका का साधन रही है। हिन्दू धर्म में तो ये नदियाँ पौराणिक आधार पर भी विशेष पूजनीय है। हिन्दु धर्म में तो जीवन की अन्तिम यात्रा भी इ

न्हीं से मिलकर समाप्त हो जाती है। इसलिए ये हमारे लिए माता के समान है जो सबका क
ल्याण ही करती है।

2 हिमालय की यात्रा में लेखक ने किन–किन की प्रशंसा की है ?

लेखकनेहिमालययात्रामेंनिम्नलिखित कीप्रशंसाकीहै –

क्ष्ज्ञि हिमालयकीअनुपमछटांकी।

क्ष्ज्ञ्ज्ञि हिमालयसेनिकलेवालीनदियोंकीअठखेलियोंकी।

क्ष्ज्ञ्ज्ञ्ज्ञि उसकीबरफ़सेढकीपहाड़ियोंकीसुदंरताकी।

क्ष्विज्ञ पेड़–पौधोंसेभरीघाटियोंकी

क्ष्वज्ञ देवदार, चीड़, सरो, चिनार, सफैदा, कैलसेभरेजंगलोंकी।

3 हिमालय जाकर लेखक ने नदियोंके प्रति अपनी सोच मेंक्या-क्या अंतर पाया?

उः हिमालय पर जाने से पूर्व लेखक सोचता था कि नदियाँ किसी संभ्रांत ,प्रौढ महिला की तरह शांत एवं गंभीर रहती हैं।उनकी धारा में डुबकी लगाने से माँ, दादी, मौसी, नानी आदि की गोद की तरह सुखानुभूति होती है, पर उसने उन्हींनदियों को अत्यंत दुबले-पतले रुप में पाया, जो मैदानों में विशाल रुप धारण के लेती हैं। इस प्रकार उसने नदियों के प्रति अपनी सोच में अंतर पाया।

व्याकरण

संज्ञा

थं समूहवाचक संज्ञा क्या होती है :– इसे समुदाय वाचक संज्ञा भी कहा जाता है। जो संज्ञा शब्द किसी समूह या समुदाय का बोध कराते है उसे समूहवाचक संज्ञा कहते हैं।

उदहारण :– गेंहू का ढेर, लकड़ी का गट्ठर , विद्यार्थियों का समूह , भीड़ , सेना, खेल आदि

त्रं द्रव्यवाचक संज्ञा क्या होती है :– जो संज्ञा शब्द किसी द्रव्य पदार्थ या धातु का बोध कराते है उसे द्रव्यवाचक संज्ञा कहते हैं।

उदहारण :– गेंहू , तेल, पानी, सोना, चाँदी, दही , स्टील , घी, लकड़ी आदि।

नीचे लिखे वाक्यों में से संज्ञा शब्द बताइए–

रंक्रज्ञ राधा कल दिल्ली जाएगी।

ाज्ञ कल
बज्ञ राधा
चज्ञ दिल्ली
दज्ञ राधा, दिल्ली

रंधज्ञ राम खेल रहा है।

ाज्ञ राम
बज्ञ खेल
चज्ञ रहा है

ख्टज्ञ वह आगरा में रहता है।

ाज्ञ वह
बज्ञ आगरा
चज्ञ रहताहै

ख्थज्ञ बुढापा किसी को अच्छा नहीं लगता।

ाज्ञ बुढापा
बज्ञ किसी को
चज्ञ अच्छा नहीं लगता

ख्त्रज्ञ वह पुस्तक पढ़ती है।

ाज्ञ वह
बज्ञ पुस्तक
चज्ञ पढ़ती है

ख्यज्ञ किसान हल चलाता है।

ाज्ञ किसान
बज्ञ हल
चज्ञ हल, किसान

ख्छज्ञ लता मंगेशकर बहुत अच्छा गाती है।

ाज्ञ लता मंगेशकर
बज्ञ बहुत अच्छा
चज्ञ गाती है

ख्षज्ञ वह कल लाल किला देखने गया।

ाज्ञ वह
बज्ञ लालकिला
चज्ञ कल

ख्क्षज्ञ घोड़ा दौड़ रहा है।

ाज्ञ घोड़ा
बज्ञ रहा है
चज्ञ दौड़

ख्त्र्एज्ञ कल मैं बनारस जाऊंगा।

ाज्ञ मैं
बज्ञ कल
चज्ञ बनारस

निबंध

भारत में नदियों का महत्व

भारत में नदियों का महत्वःइतिहासकार भारत में नदियों की भूमिका पर बहुत महत्व देते हैं। नदियों के किनारे पर प्राचीन भारत की सभ्यताओं का विकास हुआ। हड़प्पा सभ्यता के रूप में जाना जाने वाला पहला पूर्व–ऐतिहासिक प्राचीन भारतीय सभ्यता सिंधु नदी द्वारा बनाई गई सिंधु घाटी पर विकसित हुई थी। भारत के कई शक्तिशाली नदियों हिमालय से उभरते हैं। खड़ी घाटियों के माध्यम से घूमते हुए, कई सहायक नदियों से आवाज़ इकट्ठा करते हुए, जैसा कि वे जाते हैं, सिंधु और गंगा या गंगा विपरीत दिशाओं में अपने रास्ते चलते हैं, जो अरब सागर में एक हो जाता है, दूसरे बंगाल की खाड़ी में। दोनों पंद्रह सौ मील लंबा हैं गंगा ब्रह्मपुत्र द्वारा उनके मुंह के पास जुड़ा हुआ है, जो उन सभी की सबसे लंबी नदी है। इन शक्तिशाली धाराओं की तुलना में दक्कन पठार की नदियों और दक्षिण भारत कम प्रभावशाली हैं।

भारतीय इतिहास में नदियों ने हमेशा महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है अपने बैंकों के साथ–साथ सबसे पहले बस्तियों को पहले बड़े शहरों में बड़ा हुआ। पंजाब में सिंधु और उसकी सहायक उपनिवेशों द्वारा प्रदत्त उपहार, गंगा नदी के पांच नदियों की जमीन और हजारों सालों से भारत–गंगा के मैदान के विकास की शुरुआत में भारत की भारी जनसंख्या ने उपजाऊ घाटियों की खेती की है । क्या यह कोई आश्चर्य नहीं है कि शुरुआती समय से भारत के जीवन को पवित्र माना गया? आज तक, हिंदू गंगा की ञगंगा गंगाञ कहते हैं महत्वपूर्ण शहरों और राजधानियों जैसे हस्तिनापुर, प्रयाग, और पाटलीपुत्र नदियों के तट पर स्थित थे

नदियों के कई सामाजिक, वैज्ञानिक व् आर्थिक लाभ है । नदियों से जीवन के लिए अत्यन्त आवश्यक स्वच्छ जल प्राप्त होता है यही कारण है कि अधिकांश प्राचीन सभ्यताएं ,जनजातियाँ नदियों के समीप ही विकसित हुईं। उदाहरण के लिए सिंधु घाटी सभ्यता , सिंधु नदी के पास विकसित होने के प्रमाण मिले है । सम्पूर्ण विश्व के बहुत बड़े भाग मे , पीने का पानी और घरेलू उपयोग के लिए पानी , नदियो के द्वारा ही प्राप्त किया जाता है। आर्थिक दृष्टि से भी देखे तो नदियाँ बहुत उपयोगी होती है क्योंकि उद्योगो के लिए आवश्यक जल नदियों से सरलता से प्राप्त किया जा सकता है । कृषि के लिए , सिंचाई एक महत्वपूर्ण प्रक्रिया है, इसके लिए आवश्यक पानी नदियों द्वारा प्रदान किया जाता है । नदियाँ खेती के लिए लाभदायक उपजाऊ जलोढ़ मिट्टी का उत्तम स्त्रोत होती हैं। नदियां न केवल जल प्रदान करती है बल्कि घरेलू एवं उद्योगिक गंदे व अवशिष्ट पानी को अपने साथ बहकर ले भी जाती है।बड़ी नदियों का उपयोग जल परिवहन के रूप मे भी किया जा रहा है।

गतिविधिः हिमालय और नादियों के चित्र लागाइए और हिमालय पर पाँच वाक्य लिखिए।

स्वाध्यायःहिमालय से निकलने वाली नदियों के नाम लीखिए चित्र चिपकाइए और किन्ही दो का वर्णन कीजिए।

पाठ 4 कठपुतली
कविः भवानीप्रसाद मिश्र

1 कठपुतली गुस्से से----------पर छोड़ दो ।

प्रसंगः प्रस्तुत पंक्तियाँ हमारी पाठयपुस्तक वसंत भाग 2 से ली गई है। जिसके लेखक है भवानी प्रसाद मिश्र

व्याख्याःकवि कहता हे कि दूसरों के इशारे पर नाचने वाली कठपुतली को देखकर बहुत गुस्से में आकर कहने लगी । ये धागे मेरे शरीर कर आगे और पीछे क्योंबाँध रखे है?तुम इन्हें तोड़ दो और मुझे स्वतंत्र कर दो। मुझे मेरे पाँवों पर स्वतंत्र होकर चलने दो।

विशेषः कठपुतली के स्वतंत्र होने की इच्छा का वर्णन है।

2 सुनकर बोली और-और --------बहुत दिन हुए मन के छंद छुए हुए।

प्रसंगः प्रस्तुत पंक्तियाँ हमारी पाठयपुस्तक वसंत भाग 2 से ली गई है। जिसके लेखक है भवानी प्रसाद मिश्र

व्याख्याः कवि कहता है कि एक कठपुतली के स्वतंत्र होने की इच्छा है सुनकर अनय सभी कठपुतली बोलने लगी की

व्याख्याः कवि कहता है कि एक कठपुतली के स्वतंत्र होने की इच्छा है सुनकर अन्य सभी कठपुतली बोलने लगी की हमे बहुत दिन हुए अपने मन के बात नहीं की। हमने मन की इच्छाओं को दबाकर रखा है।

विशेषःगुलाम कठपुतलियों का वर्णन है।

3 पहली कठपुतली सोचने लगी------मेरे मन में जगी।

प्रसंगः प्रस्तुत पंक्तियाँ हमारी पाठयपुस्तक वसंत भाग 2 से ली गई है। जिसके लेखक है भवानी प्रसाद मिश्र

व्याख्याः कवि कहता है कि अन्य कठपुतली के स्वतंत्र होने की इच्छा देखकर पहली कठपुतली सोचने लगी यह मेरे मन में कैसी इच्छा जागी है। अबबय ह सबकी जिम्मेदारी के बारे में विचार करते लगी थी कि क्या वे मनचाहा जीवन जी पाएगी? क्या उनका यह कदम ठीक होगा।

विशेषः पहली कटपुतली के मन की इच्छा का वर्णन है।

शब्दार्थ

1 पाँव पर छोड़ देना- आत्मनिर्भर होने देना

2 गुस्से से उबली- बहुत कोधित हुई

3 मन के छंद छुना -मन की पुकार सुनना

4 कठपुतली- दूसरोंके इशारों पर नाचने वाली

5 और-और- अन्य सभी

6 पाँव पर छोड़ देना- स्वतंत्र रहने दो

7 जगी- जागी है

अति लघु प्रश्न

1कठपुतली को गुस्सा क्यों आया?:

कठपुतली को गुस्सा इसलिए आया क्योंकि वो धागे में बंधी हुई पराधीन है और वह स्वतंत्रता की इच्छा रखती है।

2कठपुतली को अपने पाँवों पर खड़ी होने की इच्छा है, लेकिन वह क्यों नहीं खड़ी होती?

कठपुतली को अपने पाँवों पर खड़ी होने की इच्छा है लेकिन वह खड़ी नहीं होती कयोंकि वह धागे से बंधी हुई होती है, उसकेअन्दर स्वतंत्रता के लिए लड़ने की क्षमता नहींहैऔर अपने पैरो पर खड़े होने की शक्ति भी नहीं है।

:

3पहली कठपुतली की बात दूसरी कठपुतलियों को क्यों अच्छी लगी ?

पहली कठपुतली की बात दूसरी कठपुतलियों को अच्छी लगी क्योंकि पहली कठपुतली स्वतंत्र होने की बात कर रही थी और दूसरी कठपुतलियाँ भी बंधन से मुक्त होकर आज़ाद होना चाहती थीं।

लघु प्रश्न

lकठपुतली को गुस्सा क्यों आया?

कठपुतलl को गुस्सा इसलिए आया क्योंकि वो धागे में बंधी हुई पराधी न है और वह स्वतंत्रता की इच्छा रखती है।

2कठपुतली को अपने पाँवों पर खड़ी होने की इच्छा है, लेकिन वहक्यों नहीं खड़ी होती?

कठपुतली को अपने पाँवों पर खड़ी होने की इच्छा है लेकिन वह खड़ी नहीं होती कयोंकि वह धागे से बंधी हुई होती है,
उसकेअन्दरस्वतंत्रताकेलिएलड़नेकीक्षमतानहींहैऔरअपनेपैरोपरखड़ेहोनेकीशक्तिभीनहीं है।

3 पहली कठपुतली की बात दूसरी कठपुतलियों को क्यों अच्छी लगी ?

पहली कठपुतली की बात दूसरी कठपुतलियों को अच्छी लगी क्योंकि पहली कठपुतली स्वतंत्र होने की बात कर रही थी और दूसरी कठपुतलियाँ भी बंधन से मुक्त होकर आज़ाद होना चाहती थीं।

सर्वनाम के भेद :-

ऋं पुरुषवाचक सर्वनाम
धं निजवाचक सर्वनाम
टंनिश्चयवाचक सर्वनाम
थंअनिश्चयवाचक सर्वनाम
त्रंसंबंधवाचक सर्वनाम
घंप्रश्नवाचक सर्वनाम

पुरुषवाचक सर्वनाम केभेद

पुरुषवाचक सर्वनाम के तीन भेद होते हैं –:

ऋं उत्तमपुरुष :जिन शब्दों का प्रयोग बोलने वाला खुद के लिए करता है। इसके अंतर्गत मैं, मेरा, मेरे, मेरी, मुझे, मुझको, हम, हमें, हमको, हमारा, हमारे, हमारी आदि आते हैं।जैसेळ मैं फुटबॉल खेलता हूँ। हम दो, हमारे दो।

धं मध्यमपुरुष :जिनशब्दों का प्रयोग सुननेवालेकेलिएकियाजाताहै।इसकेअंतर्गत तू, तुझे, तुझको, तेरा, तेरे, तेरी, तुम, तुम्हे, तुमको, तुम्हारा, तुम्हारे, तुम्हारी, आप आदि आतेहैं।जैसेळ तुम बहुतअच्छेहो।

टं अन्यपुरुष

: जिनशब्दोंकाप्रयोगकिसीतीसरेव्यक्तिकेबारेमेंबातकरनेकेलिएहोताहै।इसकेअंतर्गत यह , वह, ये, वे आदिआतेहैं।इनमें व्यक्तिवाचकसंज्ञा केउदाहरणभीशामिलहैं।

धं निजवाचक सर्वनाम

जिन शब्दों का प्रयोग वक्ता किसी चीज़ को अपने साथ दर्शाने या अपनी बताने के लिए करता है, वे निजवाचक सर्वनाम कहलाते हैं।

निजवाचक सर्वनाम के उदाहरणः

जैसे–ः

- मैं अपने कपडे स्वयं धोलूँगा।
- मैं वहां अपनेआप चला जाऊंगा।

टं निश्चयवाचकसर्वनाम

जिन सर्वनाम शब्दों से किसी वस्तु, व्यक्ति या स्थान की निश्चितता का बोध हो वे शब्द निश्चयवाचक सर्वनाम कहलाते हैं।

निश्चयवाचक सर्वनाम के उदाहरणः

जैसे –ः यह, वहआदि।

- यह कार मेरीहै।
- वह मोटर बाइक तुम्हारी है।
- ये पुस्तकें मेरीहैं।
- वे मिठाइयाँ हैं।
- यह एक गायहै।

अनुच्छेद

छात्र जीवन

छात्र जीवन किसी भी व्यक्ति के जीवन का एक महत्वपूर्ण भाग होता है।इसी समय व्यक्ति के चरित्र की नींव पड़ जाता है। बच्चो में सीखने की बहुत प्रवृत्ति होती है।युवा होने तक वह अपनी अच्छी या बुरी आदतें अपनाने लगता है।

उसे छात्र जीवन में सावधान रहकर अच्छी आदतें ही अपनानी चाहिए। इसके साथ ही छात्रों को कुए के मेढक के समान हमेशा घर में नहीं रहना चाहिए।अर्थात उसे केवल किताबी -कीड़ा बनकर नहीं रहना चाहिए। छात्र -जीवन का उददेश्य जीवन के सभी रूपों का अपने खुले नज़रिए से देखना है छात्र उस यात्री के समान है जिसे अपनी दूरियाँखुद तय करनी हैं। रास्ता उसके बदले में दूरी तय नहीं कर सकता। पुस्तकें और शिक्षक केवल उसे उसका मार्ग बता सकते हैं ।उसे बताए हुए रास्ते में चलकर अपनी मंज़िल तक स्वयं पहुँचान होता है।

स्वाध्यायः मनोरंजन के लिए दिखाए जाने वाले किसी एक खेल के बारे में लिखिए-

गतिविधिः कठपुतली का चित्र बनाएइ और उसके बारे में पाँच वाक्य लिखिए

बाल महाभारत

पाठ 6 से 10

शब्दार्थ

1 बैर - दुशमनीस

2 सानी - मुकाबला करने वाला

3 पोषित - पाला पोषा हुआ

4 मशाल - दीपशिखा

5 आहत - घायल

6 सुत-पुत्र - सारथी का बेटा

7 धावा बोलना - हमला करना

8 पराक्रमी - अत्यंत साहस वाले

9 कुमंत्रणा - बुरी सलाह

10 पुरवासी - गाँव वाले

11 वंचित - हीन, छीन लिया गया

12 अधीन - नियंत्रण

13 गूढ़ - गुप्त

14 हाँड़ी - मिटटी के घड़े जैसा बर्तन

15 विपदा - संकट

1 कुंती ने लोक लाज के डर से किसका छोड़ दिया?

उत्तरः अपने पुत्र कर्ण को

2 कुंती का विवाह किससे हुआ?

उत्तरः राजा पांडू से

3 कौरवों ने किसे मारने का निश्चय किया?

उत्तरः भीम को

4 भीम को किसने समझाया?

उत्तरः युधिष्ठिर

5 पांडवों ने किससे अस्त्र-शस्त्र की शिक्षा प्राप्त की?

उत्तरः पांडवों ने पहले कृपाचार्य और बाद मे द्रोणाचार्य से शिक्षा प्राप्त की।

6 दानवीर कौन था?

उत्तरः कर्ण

7 द्रोणाचार्य को किसने धनुर्विधा की शिक्षा दी?

उत्तरः परशुराम ने

8 जन्म से कौन अंधा था?

उत्तरः धृतराष्ट्र

9 दुर्योधन से बचने का उपाय किसने युधिष्ठर को दिया?

उत्तरःविदुर

10 भीम ने राक्षस की लाश कहा पटक दी ?

उत्तरः फाटक पर

पाठ-5 मिठाईवाला
लेखकः भगवतीप्रसाद वाजपेयी

1 स्वर- आवाज

2 पुलकित- खुश होना

3 उद्यान- बगीचा

4 स्नेहाभिषिक्त- प्रेम में डूबा हुआ

5चिकों-घुघटों

6 मुरली -बाँसुरी

7 उस्ताद- होशियार , निर्पुण

8 साफ़ा-पगड़ी

9 मादक -नशीला

10 हानि- नुकसान

11 दुअन्नी- बीस पैसा

12 स्मृति- याद

13 आजानुलंबित- घुटनों तक लंबे

14 चाव- मजे से

15 केश -बाल

16 मास- महीना

अतिलघु

1 मिठाईवाला अलग-अलग चीज़ें क्यों बेचता था और वह महीनों बाद क्यों आता था ?

बच्चे एक चीज़ से ऊब न जाएँ इसलिए मिठाईवाला अलग - अलग चीज़ें बेचता था। बच्चों में उत्सुकता बनाए रखने के लिए वह महीनों, बाद आता था। साथहीचीज़ेंनमिलनेसेबच्चेरोएँ, ऐसामिठाईवालानहींचाहताथा।

2मिठाईवाले में वे कौन से गुण थे जिनकी वजह से बच्चे तो बच्चे, बड़े भी उसकी ओर खिंचे चले आते थे ?

निम्नलिखित कारणों से बच्चे तथा बड़े मिठाईवाले की ओर खिंचे चले आते थे-

क्षज्ञि मिठाई वाला मादक - मधुर ढंग से गाकर अपनी चीज़ों को बेचता था।

क्षर्ीज्ञि वह कम लाभ में बच्चों को खिलौने तथा मिठाइयाँ देता था।

क्षर्ीींज्ञि उसके हृदय में बच्चों के लिए स्नेह था, वहकभीगुस्सानहींकरताथा।

क्षविज्ञ हरबारनईचीज़ेंलाताथा।

3खिलौनेवाले के आने पर बच्चों की क्या प्रतिक्रिया होती थी ?

खिलौनेवाले के आने पर बच्चे खिलौने देखकर पुलकित हो उठते थे। बच्चों का झुंड खिलौने वाले को चारों तरफ़ से घेर लेता था। वे पैसे लेकर खिलौने का मोलभाव करने लगते थे। खिलौ ने पाकर बच्चे खुशी से उछलने – कूदने लगते थे।

लघु प्रश्न

1रोहिणी को मुरलीवाले के स्वर से खिलौनेवाले का स्मरण क्यों हो आया ?

मुरलीवाला भी खिलौनेवाले की तरह ही गा–
गाकर खिलौने बेच रहा था। रोहिणी को खिलौने वाले का स्वर जाना पहचाना लगा इसलिए उ से खिलौनेवाले का स्मरण हो आया।

2किसकी बात सुनकर मिठाईवाला भावुक हो गया था ? उसने इन व्यवसायों को अपनाने का क्या कारण बताया ?

रोहिणी की बात सुनकर मिठाईवाला भावुक हो गया। इस तरह के जीवन में उसे अपने बच्चों की झलक मिल जाती है। उसे ऐसा लगता है कि उसके बच्चे इन्हीं में कहीं हँस –
खेल रहे हैं। यदि वो ऐसा नहीं करता तो उनकी याद में घुल–
घुलकर मर जाता, क्योंकिउसकेबच्चेअबजिंदानहींथे। इसी कारण उसने इस व्यवसाय को अपनाया।

3'अब इस बार ये पैसे न लूँगा'–कहानी के अंत में मिठाईवाले ने ऐसा क्यों कहा ?

कहानी के अंत में रोहिणी द्वारा मिठाई के पैसे मिठाईवाले ने लेने से मना कर दिया क्योंकि चु न्नू और मुन्नू को देखकर उसे अपने बच्चों का स्मरण हो आया। उसे ऐसा लगा मानो वो अप ने बच्चों को ही मिठाई दे रहा है।

दीर्घ प्रश्न

1

इस कहानी में रोहिणी चिक के पीछे से बात करती है। क्या आज भी औरतें चिक के पीछे से बा त करती हैं ? यदि करती हैं तो क्यों ? आपकी राय में क्या यह सही है ?

आज भी कुछ औरतें चिक के पीछे से बात करती हैं जैसे–

ग्रामीण महिलाएँ तथा कुछ मुस्लिम परिवारों की महिलाएँ भी ऐसा करती हैं क्योंकि उनमें प र्दा प्रथा का प्रचलन आज भी है। आज के समाज में पर्दा प्रथा सही नहीं है। इसका प्रचलन धीरे –

धीरे कम होता जा रहा है।क्योंकिइससेमहिलाओंकासंकोचपताचलताहैजोउनकीप्रगतिमेंबाध कहै।

2मिठाईवाले के परिवार के साथ क्या हुआ होगा ? सोचिए और इस आधर पर एक और कहा नी बनाइए ?

मिठाईवाला एक प्रतिष्ठत तथा सुखी सम्पन्न व्यापारी था। दुर्घटनावश किसी दिन उनकी प त्नी और उनके दोनों बच्चों की मृत्यु हो गई। पत्नी और बच्चों के न होने के कारण व्यापारी को अपना अस्तित्व और अपनी सम्पत्ति व्यर्थ लग रही थी। अतः इसी कारण मिठाईवाले ने अप ने दुःख को भुलाने के लिए दूसरे बच्चों की खुशी में अपनी खुशी को ढूढने की चेष्टा की। इसमें उसे काफी हद तक सफलता भी मिली।

3आपके माता–पिता के ज़माने से लेकर अब तक फेरी की आवाज़ों में कैसा बदलाव आया है ? बड़ों से पूछकर लिखिए।

वक्त के साथ फेरी के स्वर भी बदल गए हैं।जैसे ळ पहले फेरी वाले गाकर या कविता के माध्यम से मधुर स्वर में अपने उत्पाद के गुणों को लोगों तक पहुँचाते थे परन्तु आज के फेरीवालों के स्वर में वैसी मधुरता सुनने को नहीं मिलती।साथ ही लाउडस्पीकर जैसे उपकरणों का भी प्रयोग होने लगा है।

थं अनिश्चयवाच कसर्वनाम

जिन सर्वनाम शब्दों से वस्तु, व्यक्ति, स्थान आदि की निश्चितता का बोधन ही होता वे अनिश्चयवाचक सर्वनाम कहलाते हैं।

अनिश्चयवाचक सर्वनाम के उदाहरणः

जैसे–ः कुछ, कोई आदि।

- मुझे कुछ खानाहै।
- मेरे खाने में कुछ गिर गया।
- मुझे बाज़ार से कुछ लाना है।
- कोई आ रहा है।
- मुझे कोई नज़रआ रहा है।

त्रं प्रश्नवाचक सर्वनाम

जिन शब्दों का प्रयोग किसी वस्तु, व्यक्ति आदि के बारे में कोई सवाल पूछने या उसके बारे में जान्ने के लिए किया जाता है उन शब्दों को प्रश्नवाचक सर्वनाम कहते हैं।

प्रश्नवाचक सर्वनाम केउदाहरणः

जैसे– कौन, क्या, कब, कहाँ आदि।

- देखोतो कौन आयाहै ?
- आपने क्या खायाहै ?

घं सम्बन्ध वाचक सर्वनाम

जिन सर्वनाम शब्दों का प्रयोग किसी वस्तु या व्यक्ति का सम्बन्ध बताने के लिए किया जाए वे शब्द सम्बन्धवाचक सर्वनाम कहलाते हैं।

सम्बन्धवाचक सर्वनाम के उदाहरणः

जैसे :– जो–सो, जैसा–वैसा आदि।

- जैसी करनी वैसी भरनी।
- जो सोवेगा सो खोवेग जो जागेगा सो पावेगा।

जैसा बोओगे वैसा काटोगे

निबंध

समय का सदुप्रयोग

समय निरंतर गातिशील है। समय का चक्र लगातार घूमता रहता है। समय किसी की प्रतीक्षा नहीं करता। विधाता प्रत्येक प्राणी के जीवन क्षण निशिचत करके उसे इस धरती पर भेजता है। इस निश्चित समय में उसे अपने सभी कार्य पूरे करने होते हैं। जीवन का प्रत्येक क्षण अमूल्य है। यदि एक क्षण का भी दुरुप्रयोग किया जाता है तो मानव को उछताना पड़ता है। अतः समय का सदुप्रयोग करना आवश्यक है।

समय और मानव जीवन प्रकृति की अमूल्य निधि हैं। दोनों का ताल- मेल होना आवश्यक है।यदि समय के अनुसार चलना नहीं सीखा तो जीवन की दौंड में पीछे रह जाएँगे।हमें समय को व्यर्थ नहीं करना चाहिए। जो समय को नष्ट करता है समय उसको नष्ट कर देता है।जो समय के साथ चलता है उसे सफलता, यश, सम्मान मिलता है खुशियों से उसकी झोली भरी रहती है।इसलिए संत कबीर ने कहा है–

काल करै सो आज कर, आज करै सौ अब्ब।

पल में परलय होएगी, बहुरि करेगा कब।।

हर काम के लिए एक समय और हर समय के लिए एक काम निर्धारित होता है। अब यह मानव की बुद्धि और सोच पर निर्भर करता है कि उसने इस बात को समझा है कि नहीं रोगी को दवा समय पर न मिले तो उसका इलाज नहीं हो पाता । इक मिनट के विलंब से पहुँचन पर स्टेशन से गाडी- छूट जाती है। नेपोलियन के उच्च अधिकारी के पाँच मिनट देर से सेना लेकर आने से नेपोलियन की हार हुई। वह बंदी बना लिया गया।जो व्यक्ति समय- तालिका बनाकर अपना कार्य करते हैं, वे ने तो कभी खाली बैठते हैं और न कभी यह कहते हैंकि समय की कमी के कारण हम अमुक कार्य नहीं कर पाए।

समय पर कार्य करने वाला व्यक्ति केवल अपना भला नहीं करता बलिक अपने परिवार ,समाज तथा राष्ट्र की उन्नति में भी सहायक होता है। समय के सदुप्रयोग से मनुष्य धनवान, बुद्धिमान तथा शक्तिमान बन सकता है।समय केवल उनका साथ देता है, जो उसके मूल्य को पहचानकर उसका उचित उपयोग करते हैं अवसर चूक जाने पर समय कभी माफ़ नही करता।सही कहा गया है-

क्या वर्षा जब कृषि सुखाने।

विदयाथी -जीवन मसमय का और भी महत्व होता हैं।विदयार्थी के लिए एक-एक क्षण का महत्व होता है। विदयार्थी जीवन में प्राप्त की हुई विदया एवं योग्यता पर ही भावी जीवन रूपी भवन खड़ा होता हैं।अतः इसका सदुप्रयोग करना प्रत्येक विदयार्थी का कर्तव्य है।

स्वाध्यायः किसी एक व्यवसायकारो पर एक अनुच्छेद लिखिए-

गतिविधिः व्यवसायकारों का चित्र चिपकाइए-

पाठ 6-रक्त और हमारा शरीर
लेखकः यतीश अग्रवाल

1 एनीमिया - खून की कमी से होने वाला रोग

2 स्लाइड -काँच की पतली छोटी पटिटका

3 जिज्ञासा-जानने की इच्छा

4 भानुमती का पिटारा- जिसमें अनेक वस्तुएँ रखी गई हो

5 पौष्टिक -ताकतवर

6 दूषित- गंदा

7 धावा बोलना- हमला करना

8 वर्ग- समूह

9 अवतल- किनारे से मोटी बीच से पतली

10 संक्षेप में-छोटे रूप में

11 प्लाजमा- शरीर में रक्त का तरल भाग

12 निराधार- बिना आधार के

अति लघू प्रश्न

1 दिव्या को डॉक्टर के पास क्योंले जाना पड़ा?

उत्तरः क्योंकि कुछ दिनों से उसे हर समय थकान लगी रहती थी और उसका मन काम में नहीं लग रहा था।

2 डॉक्टर ने दिव्या की रिपोर्ट के बारे में अनिल को क्या बताया?

उत्तरः डॉक्टर दीदी ने दिव्या की रिपोर्ट देखकर बताया कि दिव्या को एनीमिया है।वह कुछ दिन दवा लेगी तो ठीक हो जाएगी।

3 लाल रक्त कण किस आकार के होते है?

उत्तरः लाल रक्त कण जैसे बालूशाहियाँ रख दी हो। ये गोल, दोनौं ओर उभारे तथा बीच में दबे होते हैं।

4 भोजन से पूर्व हाथ क्योंधोने चाहिए?

उत्तरः भोजन से पूर्व हाथ इसलिए धोने चाहिएए, ताकि हमारे हाथों में जो जीवाणु लगे है वे भोजन के साथ शरीर में न जा पाएँ।

लघु प्रश्न

ऋंरक्त के बहाव को रोकने के लिए क्या करना चाहिए?ः

जब शरीर के किसी हिस्से पर घाव बन जाए और रक्त बहने लगे तो सर्व प्रथम उस स्थान

पर सा फ़ कपड़े को कसकर बाँध देना चाहिए ताकि रक्त के प्रवाह को रोका जा सके ।इस तरह रक्त का प्रवाह तुरन्त रूक जाएगा परन्तु इस तरकीब से भी बात ना बने और रक्त का प्रवाह बना रहे तो तुरन्त ही डाक्टर के पास उपचार के लिए मरीज़ को ले कर जाना चाहिए।

2 एनीमिया से बचने के लिए हमें क्या-क्या खाना चाहिए?
अनसभेरः

इससे पहले ये समझना आवश्यक है कि एनीमिया है क्या। जब हमारे शरीर को उचित पौष्टिक आहार मिल नहीं पाता तो हमारे शरीर में रक्त का निर्माण होना बन्द हो जाता है।शरीर में रक्त की कमी होने लगती है और रक्त में होने वाली लाल-कणों की इसी कमी को एनीमिया कहते हैं।इसलिए हमें चाहिए कि हम सदैव पौष्टिक आहार ही लें।जैसे ळ हरी सब्जियाँ, दालें, दूध, माँस-मछली, अंडे इत्यादि प्रचुर मात्रा मेंलें।

3पेट में कीड़े क्यों हो जाते हैं?इनसे कैसे बचा जा सकताहै?
अनसभेरः

जब हम बाहर का दूषित खाना व जल पीते हैं तो ये दोनों ޘदूषितखानावजलझ शरीर में पेट के कीड़ों के लिए वाहक के रूप में कार्य करतेहैं।कुछ कीड़ों के लार्वे तो ज़मीन की ऊपरी सतह पर होते हैं इसलिए हमें चाहिए कि हम नंगे पैर इधर-उधर न घूमें और शौचालय का इस्तेमाल करने केपश्चात्साI बुन से भली-भाँति हाथ धोएँ, बाहर का खाना न खाएँ व दूषित पानी न पीएँ आदि सावधानियों से स्वयं को इन पेट के कीड़ों से बीमार होने से बचा सकते है

दीर्घ प्रश्न

:

1रक्त के सफ़ेद कणों को ऽवीर सिपाहीॅ क्यों कहा गया है?

सफ़ेद रक्त कणों का कार्य शरीर में घर बना रहे रोगाणु से हमारी रक्षा करना होता है।ये रक्त कण उन से एक वीर सिपाही की भांति लड़ते हैं और जहाँ तक संभव हो सके उनकी कार्य क्षमता को शिथिल कर हमें उनसे सुरक्षा प्रदान कराते हैं।इसलिए इन्हें वीर सिपाही की संज्ञा दी गई है।एक वीर सिपाही भी देश की रक्षा करने हेतु बाहरी ताकतों से लोहा लेता है और देश व उसकी सीमा को सुरक्षा प्रदान करता है।

:

2ब्लड-बैंक में रक्त दान से क्या लाभ है?

ब्लड बैंक को अस्पता ल में बनाने का उद्देश्य यह है कि मरीज़ को रक्त की आवश्यकता होने पर रक्त की आपूर्ति कराई जा सके।हर मनुष्य का रक्त एक सा नहीं होता ।रक्त को चार वर्गों में विभाजित किया जाता है।इसी रक्त विभाजन केआधार पर हर व्यक्ति कोअलग-अलग रक्त-समूह चढ़ाया जाता है।इसी आधार पर ब्लड बैंक का निर्माण हुआ परन्तु इस बैंक को बनाए रखने के लिए रक्त कीआवश्यकता होती है जोत भी संम्भव हैजब हम सब समय-समय पर रक्तदान कराते रहें और ब्लड बैंक में रक्तका भण्डार बनाए रखें ।क्यों कि यदि हम रक्त दान न करें तो ब्लड बैंक में रक्त की कमी हो जाएगी और ज़रूरत पड़ने पर मरीज़ों को रक्त की कमी की वजह से परेशानियों से गुज़रना पड़ सकता है या फिर उनकी जान भी जा सकती है।इसलिए हमें सदैव रक्तदान करना चाहिए व सबको इसके प्रति जागृत कराते रहना चाहिए।

3 खूनको ‘भानुमती का पिटारा’ क्यों कहा जाताहै?

क्योंकि रक्त दिखने में तो द्रव की भांति होता है परन्तु इसके विपरीत उसके अंदर एक अलग दुनिया का ही प्रतिबिम्ब होता है।रक्त दो भागों में विभाजित होता है ळ एक भाग तरल रूप मेंहोता हैजिसे हम प्लाज़्मा के नाम से जानते हैं, दूसरे भाग में हर प्रकार व आकार के कण होते हैं। कुछ सफ़ेद होते हैं तो कुछ लाल, और कुछ रंग हीन होते हैं।ये सब कण प्लाज़्मा में तैरते रहते हैं।रक्त का लाल रंग लालकणों के कारण होता है क्योंकि रक्त की एक बूंद में इनकी संख्या करीब चा लीस से पचपन लाख होती है ।इनकी इसी अधिकता के कारण रक्त लाल प्रतीत होता है।इनका कार्य ऑक्सीजन को शरीर के एक स्थान से दूसरे स्थान तक पहुँचाना होता है। लाल कण के बाद सफ़ेद कणों का कार्य रोगाणु ओं से हमारी रक्षा करना होता है और जो रंग हीन कण होते हैं जिन्हें हम बिंबाणु कहते हैं।इनका कार्य घाव को भरने में मदद करना होता है।इस प्रकार रक्त की एक बूँद अपने में ही जादुई दुनिया को समेटे हुए है जिसके लिए ञभानुमती का पिटाराञ कहना सर्वथा उचित है।

विशेषण की परिभाषा

- विशेषण वे शब्द होते हैं जो संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बताते हैं। ये शब्द वाक्य में संज्ञा के साथ लगकर संज्ञा की विशेषता बताते हैं।

विशेषण के भेद

ऋं गुणवाचक विशेषण :

जो विशेषण हमें संज्ञा या सर्वनाम के रूप, रंग आदि का बोध कराते हैं वे गुणवाचक विशेषण कहलाते हैं। जैसेः

- ताजमहल एक सुन्दर इमारत है।
- जयपुर में पुराना घरहै।
- जापान में स्वस्थ लोग रहत हैं।
- मैं ताज़ा सब्जियां लाया हूँ

धं संख्यावाचक विशेषण :

ऐसे शब्द जो संज्ञा या सर्वनाम की संख्या के बारे में बोध कराते हैं वे शब्द संख्यावाचक विशेषण कहलाते हैं। जैसेः

- विकास चार बार खाना खाता है।
- मीना चार केले खाती है।
- दुनिया में सात अजूबे हैं।
- हमारे विद्यालय में दो सौ विद्यार्थी पढ़ते हैं।

टं परिमाण वाचक विशेषण :

जो शब्द संज्ञा या सर्वनाम की मात्रा के बारे में बताते हैं वे शब्द परिमाणवाचक विशेषण कहलाते हैं। जैसेः

- मुझे एक किलो टमाटर लाकर दो।
- बाज़ार से आते वक्त आधा किलो चीनी लेते आना।
- जाओ एक मीटर कपड़ा लेकर आओ।
- मुझे थोड़ा सा खाना चाहिए।

थं सार्वनामिक विशेषण :

जो सर्वनाम शब्द संज्ञा से पहले आएं एवं विशेषण की तरह उस संज्ञा शब्द की विशेषता बताएं तो वे शब्द सार्वनामिक विशेषण कहलाते हैं। जैसेः

- यह लड़का कक्षा में अव्वल आया।
- वह आदमी अच्छे से काम करना जानता है।
- यह लड़की वही है जो मर गयी थी।
- कौन है जो सबसे उत्तम है ?

विषय ळ बहन की शादी के लिए अवकाश प्रदान हेतु प्रार्थना पत्र।

महोदय,

सविनय निवेदन यह है कि मैं आपके विद्यालय के कक्षा छवीं का विद्यार्थी हूँ। मेरे घर में मेरी बहन की शादी है। जिसकी दिनांक ऋएएक्षधएधए और ऋऋएक्षधएधए निश्चित हुई है, मैं अपने पिता का इकलौता पुत्र हूँ, अतः शादी में बहुत से कार्यों में मेरा होना अति आवश्यक है। इसी कारण मुझे एप्रएक्षधएधए से ऋधएक्षधएधए तक का अवकाश चाहिए।
अतः आपसे विनम्र निवेदन है कि आप मुझे अवकाश प्रदान करने की कृपा करें, इसके लिए मैं आपका आभारी रहुँगा।

धन्यवाद।

आपका आज्ञाकारी शिष्य,
नाम ळ स्वाधीन शर्मा
कक्षा ळ छवीं
रोल नंबर ळ टथ
दिनांक ळ एछएक्षधएधए

स्वाध्यायः रक्तदान क्यों करना चाहिए लिखिए-

गतिविधि

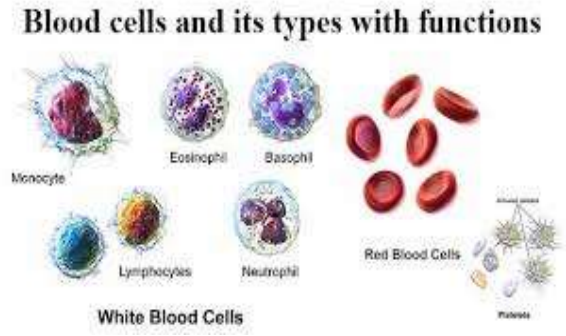

बाल महाभारत पाठ 11 से 15

शब्दार्थ

1 पदार्पण- कदम रखना

2 विप्लव - प्रलय

3 प्रलोभन- लालच

4 भग्नावशेष- टूटे-फूटे बचे अवशेष

5 लोहा मानना- हार मानना

6 वत्कल- वृक्षों की छाल से बना वस्त्र

7 फसाद- विद्रोह

8 चौसर- जुए जैसा खेल

9अज्ञातवास- छुपकर रहना

10 अजातशत्रु- जिसने शत्रुओं को जीत लिया हो

प्रश्नोत्तर

1 द्रौपदी ने किसे वर माला पहना दी?

उत्तरः अर्जुन को

2 इंद्रप्रस्थ में माता कुंती तथा पांडवों ने कितने वषर बिताए?

उत्तरः तेईस वर्ष

3 युधिष्ठिर किससे मिलना चाहते थे?

उत्तरः श्री कृष्ण से

4 जरासंध का अंत किसने किया?

उतत्रःभीमसेन ने

5 शकुनि किसका मामा था?

उत्तरः कौरवों का

6 चौसर का खेल किसकी जड़ है?

उत्तरः सारे अनर्थ की

7 खेल में कौन सी शर्त थी?

उत्तरः हारा हुआ दल बारह वर्ष वनवास करेगा तथा एक वर्ष अज्ञातवास भोगना होगा।स

पाठ 7 पापा खो गए

लेखकः विजय तेंदुलकर

शब्दार्थ

1 भंगिमा- मुद्रा, दिखने का ढंग

2 जम्हाई- उबासी लेना

3 चंगी -टैक्स

4 गश्त लगाना-घूमना

5 स्तब्ध- अवाक

6 संरक्षण-बचाव

7 घनी- सघन

8 यत्न-उपाय

9 प्रेक्षक-दर्शक

10 निर्जीव- बेजान

11 ईद-गिर्द-चारों ओर

12 दाद देना- प्रशंसा करना

अति लघू प्रश्न

1नाटक में आपको सबसे बुद्विमान पात्र कौन लगा और क्यों ?

नाटक में सबसे बुद्धिमान पात्र कौआ है क्योंकि अन्ततः कौए ने ही लड़की के पापा को ढूंढने का उपाय बताया। उसी की योजना के कारण लैटरबक्स संदेश लिख पाता है।

2 पेड़ और खंभे में दोस्ती कैसे हुई ?

पेड़ और खंभा दोनों पास-
पास खड़े होते हैं। एक दिन जब ज़ोरों की आंधी आती है तब खंभा पेड़ के ऊपर गिरने से खुद को रोक नहीं पाता। उस वक्त पेड़ खंभे को संभाल लेता है और स्वयं ज़ख्मी हो जाता है। इसी कारण खंभे का गरूर भी खत्म हो जाता है। अन्ततः दोनों में दोस्ती हो जाती है।

3 लैटरबक्स को सभी लाल ताऊ कहकर क्यों पुकारते थे ?

लैटरबक्स ऊपर से नीचे तक पूरा सिर्फ़ लाल रंग का था। वह बड़ों की तरह बातें भी करता था इसीलिए सभी उसे लाल ताऊ कहकर पुकारते थे।

4लाल ताऊ किस प्रकार बाकी पात्रों से भिन्न है ?

पूरे नाटक में केवल लाल ताऊ ही एक ऐसा पात्र है जिसे पढ़ना-
लिखना आता है। बाकी पात्रों में से किसी को भी लिखना या पढ़ना नहीं आता है। उसे दोहे, भ जन भी गाना आता है। लाल ताऊ के यही गुण उसे अन्य सभी पात्रों से भिन्न बनाते हैं।

लघु प्रश्न

1नाटक में बच्ची को बचानेवाले पात्रों में एक ही सजीव पात्र है। उसकी कौन-
कौन सी बातें आपको मज़ेदार लगीं ? लिखिए।

नाटक में बच्ची को बचाने वाले पात्रों में कौआ ही एक मात्र सजीव पात्र है। उसकी मज़ेदार बा तें-

क्षिज्ञ ताऊ, एक जगह बैठे रहकर यह कैसे जान सकोगे ? उसके लिए तो मेरी तरह रोज़ चारों दिशाओं में गश्त लगानी पड़ेगी, तब जान पाओगे यह सब।

क्षिज्ञिज्ञ लड़की के नींद से जग जाने तथा ''कौन बोल रहा'' पूछने पर कहना-
''मैंनें नहीं की''।

क्षिज्ञिज्ञिज्ञ ''वह दुष्ट है कौन ? पहले उसे नज़र तो आने दीजिए।''

क्षविज्ञ
''सुबह जब हो जाए तो पेड़ राजा, आप अपनी घनी छाया इस पर किए रहें। वह आराम से दे र तक सोई रहेगी।

2क्या वजह थी कि सभी पात्र मिलकर भी लड़की को उसके घर नहीं पहुँचा पा रहे थे ?

सभी पात्र मिलकर भी लड़की को उसके घर पर नहीं पहुँचा पा रहे थे। क्योंकि लड़की इतनी छोटी थी और इतनी भोली थी कि उसे अपने घर का पता, गली का नाम, सड़क का नाम, घर का नंबर यहाँ तक की अपने पापा का नाम तक नहीं मालूम था। ऐसी अवस्था में लड़की को उसके घर तक पहुँचाना संभव नहीं था।

3 खंभे को बरसात की रोतें अच्छी क्यों नही लगती?

क्योंकि उसे बरसात की रातों में पूरी रात भीगना पड़ता है। वह वह रात भर पानी की मार खाता है और तेज हवा चलने पर बल्ब को भी कसकर पकड़े रहना पड़ता है। उसका मन करता है कि बल्ब फेंक कहीं दूर चला जाए।

दीर्घ प्रश्न

1 पेड़ जहाँ स्थित था वहाँ उसने क्या-क्या बदलाव देखे?

उः पेड़ का जन्म समुद्र के किनारे सड़क के बगल में हुआ था। वह खंभे से उम्र में काफी बड़ा था, उसके शरीर पर पत्तों का कोट उसे सर्दी,वर्षा और धूप से बचाता था। बाद में वहाँ खंभे को खड़ा किया गया। सामने दूर-दूर तक फैला समुद्र था।

यहाँ के बडें-बड़े मकान बाद मेंबने। सड़क बाद मेंबनी ,सिनेमा के पोस्टर बाद में लगे। इस प्रकार उसने अनेको बदलाव देखे।

2मराठी से अनूदित इस नाटक का शीर्षक 'पापा खो गए' क्यों रखा गया होगा ? अगर आप के मन में कोई दूसरा शीर्षक हो तो सुझाइए और साथ में कारण भी बताइए।

लड़की को अपने पापा का नाम-पता कुछ भी मालूम नहीं था। इधर-
उधर आपस में बातें करने पर भी इसकी कोई जानकारी नहीं मिलती। तब सभी पात्र एक जुट

होकर लड़की के पापा को ढूंढने की योजना बनाते हैं। सम्भवतः इसी कारण से इस नाटक का शीर्षक 'पापा खो गए' रखा गया होगा।

प्रस्तुत नाटक में लड़की अपने पापा से अलग होकर खो जाती है। नाटक के अधिकांश भाग में लड़की के नाम–
पते की जानकारी इकट्ठा करने की कोशिश की जाती है। अतः पाठ का नाम 'लापता बच्ची' रखना अधिक उपयुक्त लगता है।

क्रिया **क्षेत्रज्ञ** की परिभाषा

जिस शब्द से किसी काम का करना या होना समझा जाय, उसे क्रिया कहते है। जैसेः पढ़ना, खाना, पीना, जानाइत्यादि। ञक्रियाञ काअर्थहोताहै ळ करना।प्रत्येक भाषा के वाक्य में क्रिया का बहुत महत्त्व होता है। प्रत्येक वाक्य क्रिया से ही पूरा होता है। क्रिया किसी कार्य के करने या होने को दर्शाती है। क्रिया को करने वाला ञकर्ताञ कहलाता है।

सकर्मक क्रिया की परिभाषा

जिस क्रिया में कर्म का होना ज़रूरी होता है वह क्रिया सकर्मक क्रिया कहलाती है। इन क्रियाओं का असर कर्ता पर न पड़कर कर्म पर पड़ता है।सकर्मक अर्थात कर्म के साथ।

जैसेः विकास पानी पीता है। इसमें पीता है क्षेक्रियाज्ञ का फल कर्ता पर ना पडके कर्म पानी पर पड़ रहा है।अतःयह सकर्मक क्रिया है।

सकर्मक क्रिया के उदाहरण

- हरीश फुट बॉल खेलता है।

- मनीषा खाना पकाती है।
- आतंकी गाडी चलाता है।
- पुष्प कलिको बुलाता है।

अकर्मक क्रिया की परिभाषा

- जिस क्रिया का फल कर्ता पर ही पड़ता है वह क्रिया अकर्मक क्रिया कहलाती हैं ।इसक्रिया में कर्म का अभाव होता है।जैसे :

• अकर्मक क्रिया के उदाहरण

- राजेश दौड़ता है।
- सांप रेंगता है।
- पूजा हंसती है।

पिता और पुत्र में वार्तालाप –

पिता – बेटे अतुल, कैसा रहा तुम्हारा परीक्षा–परिणाम?
पुत्र – बहुत अच्छा नहीं रहा, पिताजी।
पिता – क्यों? बताओ तो कितने अंक आए हैं?
पुत्र – हिन्दी में सत्तर, अंग्रेजी में बासठ, कामर्स में अस्सी, अर्थशास्त्र में बहत्तर
पिता – अंग्रेजी में इस बार इतने कम अंक क्यों हैं? कोई प्रश्न छूट गया था?
पुत्र – पूरा तो नहीं छूटा सबसे अंत में 'ऐस्से' लिखा था, वह अधूरा रह गया।
पिता – तभी तो । अलग–अलग प्रश्नों के समय निर्धारित कर लिया करो, तो यह नौबत नहीं आएगी। खैर, गणित तो रह ही गया।
पुत्र – गणित अच्छा नहीं हुआ था। उसमें केवल पचास अंक आए हैं।
पिता – यह तो बहुत खराब बात है। गणित से ही उच्च श्रेणी लाने में सहायता मिलती है।
पुत्र – पता नहीं क्या हुआ, पिताजी। एक प्रश्न तो मुझे आता ही नहीं था। शायद पाठ्यक्रम से बाहर का था।

पिता – एक प्रश्न न करने से इतने कम अंक तो नहीं आने चाहिए।

पुत्र – एक और प्रश्न बहुत कठिन था। उसमें शुरू से ही ऐसी गड़बड़ी हुई कि सारा प्रश्न गलत हो गया।

पिता – अन्य छात्रों की क्या स्थिति है ?

पुत्र – बहुत अच्छे अंक तो किसी के भी नहीं आए पर मुझसे कई छात्र आगे हैं।

पिता – सब अभ्यास की बात है बेटे, सुना नहीं *'करत करत अभ्यास के, जड़मति होत सुजान।'* तुम तो स्वयं समझदार हो। अब वार्षिक परीक्षाएँ निकट है। दूरदर्शन और खेल का समय कुछ कम करके उसे पढ़ाई में लगाओ।

पुत्र – जी पिताजी, मैं कोशिश करूँगा कि अगली बार गणित में पूरे अंक लाऊँ।

पिता – मेरा आशीर्वाद तुम्हारे साथ है।

स्वाध्यायः अपने पिताजी के विषय में एक अनुच्छेद लिखिए-

गतिविधिः परिवार का चित्र लागइए

पाठ 8 शाम एक किसान
सर्वेश्वरदयाल सक्सेना

1 आकाश का साफा---------भेड़ों के गल्ले -सा।

प्रसंगःप्रस्तुत पंक्तियाँ हमारी पाठयपुस्तक 'वसंत भाग 2'से ली गई है जो कवि सर्वेश्वर दयाल सक्सेना रचित है।

व्याख्याः कवि कहता है किशाम के समय पहाड़ किसान की तरह बैठा दिखाई दे रहा है। वह अपने सिर पर आकाश को सूर्य को चिलम की तरह बाँधे हुए है तथा सूर्य को चिलम की तरह पीता हुआ लग रहा है। दूर नदी बहती हुई उसके घुटनो पर चादर की तरह लग रही है।पास ही पलाश का जंगल है।इन पलाश के वृक्षो पर लगे लाल फूल जलती हुई अंगीठी के समान लगते है। दूर पूर्व दिशा में अंधेरा भेडोंके समूह के समान दुबका हुआ बैठा है।

विशेषः इसमें कवि ने किसान के रूप में सर्दी की शाम के प्राकृतिक सौंदर्य का वर्णन किया है।

2 अचानक -बोला मोर----------अँधेरा छा गया।

प्रसंगः प्रस्तुत पंक्तियाँ हमारी पाठयपुस्तक 'वसंत भाग 2'से ली गई है जो कवि सर्वेश्वर दयाल सक्सेना रचित है।

व्याख्याःकवि कहता है कि शाम का दृश्य था। अचानक मोर बोल पड़ा । ऐसा लगता है जैसे किसी ने 'सुनते हो' की आवाज लगाई हो। चिलम ऊँधी हो गई। उसमें से धुआँ उठा पश्चिम दिशा में सूर्य डुब गया। चारों ओर अंधेरा छा गया।

विशेषःशाम के शांत वातावरण

5 चिल्म -हुक्के ऊपर रखने वाली वस्तु

6 औधी- उल्टी

7 सूरज डूबा- सूर्य अस्त हुआ

अतिलघु प्रश्न

।कविता में किस समय का वर्णन है?

उत्तरः शाम का

2 पूरब मेंअंधकार किस प्रकार दिख रहा है?

उत्तरः भेडों के झुंड सा

3 मोर ने किसे आवाज़ दी होगी?

उत्तरः किसान को

4 धुआँ उठने का कारण क्या था?

उत्तरः चिलम उलट जाना

लघु प्रश्न

1 पहाड़ रूपी किसान की चिलम किसे कहा गया है और क्यों?

उत्तरः पहाड़ रूपी किसान की चिलम डूबते सूरज को कहा गया है। इसका कारण यह है किजिस प्रकार चिलम के ऊपरी भाग में रखी आग धीरे-धीरे बुझती जाती है, उसी प्रकार सायंकालीन सूरज अब डूबने वाला है और कुछ ही समय में चिलम की आग की तरह अपनी चमक खो देगा।

2 जंगल मेंपलाश के पौधे कैसे लग रहे हैं?

उत्तरः पहाड़ के सामने जंगल में पलाश के पौधों पर सुर्खलाल रंग के फूल दहकते अँगारे जैसे लग रहे हैं। इससे ये पौधे अँगीटी के समान लग रहे हें।

3 जंगल की अँगीठी किसे कहा गया है और क्यों

उत्तरःजंगल की अंगीठी पलाश के लाल सुर्ख फूलों को कहा गया है। ये लाल रंग के फूल दहकते अँगारे की भाँति प्रतीत हो रही हैं।

दीर्घ प्रश्न

1 आकाश की कल्पना पर्वत रूपी किसान के सिर पर बँधे साफे से क्यों की गई है?

पर्वत रूपी किसान का सिर अत्याधिक ऊँचा है। ऐसा लगता है जैसे उसकी चोटी आसमान को छू रही हो। इसी चोट के आस-पास बादलों के टुकड़े भी है, जो चोटी को छूते प्रतीत हो रहे हैं। आकाश और बादल के टुकड़े पहाड़ के सिर पर बँधे दिखने के कारण उसकी कल्पना साफे के रूप में की गई है।

2 अंधकार को किसके समान कहा गया है और क्यों?

उत्तरः शाम -एक किसान कविता में अंधकार को भेडा के झूंड के समान कहा गया है। इसका कारण यह है कि सूरज ज्यों-ज्यों छिपने वाला होता है , त्यों ळ त्यों पूरब में क्षितिज पर अंधकार गहरने लगता है। भेडों के झुंड का रंग और अंधकार एक से दिखने लगता है।

3 'शाम -एक किसान' कविता मेंप्राकृतिक चित्रण को अपने शब्दों में लिखिए।
उत्तरः इसमें पहाड़ को बैठे हुए किसान के रूप में दर्शाया गया है। इस किसान के सिर पर आकाश का साफा बँधा है। उसके घुटनों पर नदी को चादर पड़ी है। किसान सूरज की चिंलम का कश लगा राह है। उसके पास ही पलाश के गंगल की अँगीठी दहक रही है। पूरब में अँधेरा भेडों -सा बैठा है।अचानक मोर बोलता है। सूरज डुब जाता है और अँधेरा हो जाता है।

स्वाध्यायः शाम , और किसान पर पाँच-पाँच वाक्य लिखिए-

गतिविधि प्रकृति द्रश्य का चित्र लगाइए-

उपसर्ग :

उपसर्ग दो शब्दों से मिलकर बना होता है उप+सर्ग।उप का अर्थ होता है समीप और सर्ग का अर्थ होता है सृष्टि करना ।संस्कृत एवं संस्कृत से उत्पन्न भाषाओँ में उस अव्यय या शब्द को उपसर्ग कहते है। अथार्त शब्दांश उसके आरम्भ में लगकर उसके अर्थ को बदल देते हैं या फिर उसमें विशेषता लाते हैं उन शब्दों को उपसर्ग कहते हैं। शब्दांश होने के कारण इनका कोई स्वतंत्र रूप से कोई महत्वन हीं माना जाता है।

ऋं अन **ळ क्ष**अभाव **,**निषेध **,** नहीं **ज्ञ ळ**

अनजान , अनकहा , अनदेखा , अनमोल , अनबन , अनपढ़ , अनहोनी , अछूत , अचेत , अनचाहा , अनसुना , अलग , अनदेखीआदि।

धं अध् **ळ क्ष** आधा **ज्ञ ळ**

अधपका ,अधमरा , अधक्च्चा , अधकचरा , अधजला , अधखिला , अधगला , अधनंगाआदि।

टं उन **ळ क्ष** एककम **ज्ञ ळ**

उनतीस ,उनचास , उनसठ , उनहत्तर , उनतालीस , उन्नीस , उन्नासीआदि।

थं दु **ळ क्ष**बुरा ,हीन , दो , विशेष , कम **ज्ञ ळ**

दुबला , दुर्जन , दुर्बल , दुलारा , दुधारू , दुसाध्य , दुरंगा , दुलत्ती , दुनाली , दुराहा , दुपहरी , दुगुना , दुकालआदि।

त्रं नि **ळ क्ष** रहित , अभाव , विशेष , कमी **ज्ञ ळ**

निडर ,निक्कमा , निगोड़ा , निहत्था , निहालआदि।

घं अ–**क्ष**अभाव ,निषेध **ज्ञ ळ**

अछुता ,अथाह , अटल , अचेतआदि।

छं कु **ळ क्ष** बुरा , हिन् **ज्ञ ळ**

कुचाल , कुचैला , कुचक्र , कपूत , कुढंग , कुसंगति , कुकर्म , कुरूप , कुपुत्र , कुमार्ग , कुरीति , कुख्यात , कुमतिआदि।

षं औ **ळ क्ष**हीन ,अब , निषेध **ज्ञ ळ**

औगुन ,औघर , औसर ,औसान , औघट , औतार , औगढ़ , औढरआदि।

क्षं भर **ळ क्ष** पूरा , ठीक **ज्ञ ळ**

भरपेट ,भरपूर , भरसक , भरमार , भरकम , भरपाई , भरदिनआदि।

ऋएं सु **ळ क्ष** सुंदर , अच्छा **ज्ञ ळ**

सुडौल ,सुजान , सुघड़ , सुफल , सुनामी , सुकाल , सपूतआदि।

ऋऋं पर **ळ क्ष** दूसरीपीढ़ी , दूसरा , बादका **ज्ञ ळ**

परलोक , परोपकार , परसर्ग , परहित , परदादा , परपोता , परनाना , परदेशी , परजीवी , परकोटा , परलोक , परकाजआदि।

ऋधं बिन **ळ क्ष** बिना , निषेध **ज्ञ ळ**

बिनब्याहा , बिनबादल , बिनपाए , बिनजाने , बिनखाये , बिनचाहा , बिनखाया , बिनबोया , बिनामांगा , बिनजाया , बिनदेखा , बिनमंगेआदि

निबंध

विज्ञानः वरदान या अभिशाप

आज का युग विज्ञान का युग है । हमारे जीवन का कोई भी क्षेत्र इससे अछूता नहीं है । प्राचीन काल में असंभव समझे जाने वाले तथ्यों को विज्ञान ने संभव कर दिखाया है । छोटी–सी सुई से लेकर आकाश की दूरी नापते हवाई जहाज तक सभी विज्ञान की देन हैं ।

विज्ञान ने एक ओर मनुष्य को जहाँ अपार सुविधाएँ प्रदान की हैं वहीं दूसरी ओर दुर्भाग्यपूर्ण यह है कि नाभिकीय यंत्रों आदि के विध्वंशकारी आविष्कारों ने संपूर्ण मानवजाति को विनाश के कगार पर लाकर खड़ा कर दिया है । अतः एक ओर तो यह मनुष्य के लिए वरदान है वहीं दूसरी ओर यह समस्त मानव सभ्यता के लिए अभिशाप भी है ।

वास्तविक रूप में यदि हम विज्ञान से होने वाले लाभ और हानियों का अवलोकन करें तो हम देखते हैं कि विज्ञान का सदुपयोग व दुरुपयोग मनुष्य के हाथ में है । यह मनुष्य पर निर्भर करता है कि वह इसे किस रूप में लेता है । उदाहरण के तौर पर यदि नाभिकीय ऊर्जा का सही दिशा में उपयोग किया जाए तो यह मनुष्य को ऊर्जा प्रदान करता है जिसे विद्युत उत्पादन जैसे उपभोगों में लिया जा सकता है ।

परंतु दूसरी ओर यदि इसका गलत उपयोग हो तो यह अत्यंत विनाशकारी हो सकता है । द्वितीय विश्व युद्ध के समय जापान के हिरोशिमा एवं नागासाकी शहरों में परमाणु बम द्वारा हुई विनाश-लीला इसका ज्वलंत उदाहरण है ।

विज्ञान के वरदान असीमित हैं । विद्युत विज्ञान का ही अद्भुत वरदान है जिससे मनुष्य ने अंधकार पर विजय प्राप्त की है । विद्युत का उपयोग प्रकाश के अतिरिक्त मशीनों, कल-कारखानों, सिनेमाघरों आदि को चलाने में भी होता है ।

इसी प्रकार चिकित्सा के क्षेत्र में विज्ञान ने अभूतपूर्व सफलताएँ अर्जित की हैं । इसने असाध्य समझे जाने वाले रोगों का निदान ढूँढकर उसे साध्य कर दिखाया है । यात्रा के क्षेत्र में भी विज्ञान की देन कम नहीं

है । इसके द्वारा वर्षों में तय की जाने वाली यात्राओं को मनुष्य कुछ ही दिनों या घंटों में तय कर सकता है ।

हवाई जहाज के आविष्कार ने तो मनुष्य को पंख प्रदान कर दिए हैं । विज्ञान के माध्यम से मनुष्य ने चंद्रमा पर विजय प्राप्त कर ली है और अब वह मंगल ग्रह पर विजय प्राप्त करने की तैयारी कर रहा है । विज्ञान की देन असीमित है

महाभारत पाठ 16 से 20

शब्दाथ

1 अनुसरण- पीछे चलना

2 कुरेदना- खुरचना

3 घाटियाँ -पहाडों के बीच की समतल और हरी-भरी भूमि

4 आवभगत -सेवा सत्कार

5 अनुग्रहीत करना- कृपा करनासी

6 धिक्करना- कोसना

7 तरकश – तीर रखने का पात्र

8 बाट जोहना– प्रतीक्षा करना

9मरणासन्न –जिसकी भी क्षण मृत्यु हो सकती हो

10 दिव्यास्त्र– अलौकिक शक्तियों से युक्त

प्रश्नोत्तर

1 धृतराष्ट्र क्यों चिंतित थे

उत्तरः पांडवों के वन जाने के कारण

2 दौपदी किससे मिली?

उत्तरः श्री कृष्ण से

3 द्रौपदी ने भीम से क्या मांगा?

उत्तरः फूल

4 भीम की मुलाकात किससे हुई?

उत्तरः हनुमान से

5 कौन दुर्योधन की चापलूसी किया करते थे?

उत्तरः कर्ण और शकुनि

6 कौन दुर्योधन के राजभवन में पधारे?

उत्तरः महर्षि दुर्वासाा

7 पांडवों को कितने वर्ष का वनवास हुआ था?

उत्तरः बारह वर्ष का

8 सबसे पहले किसने तालाब का पानी पिया?

उत्तरः नकुल ने

9 युधिष्ठिर कहाँ पहुचे?

उत्तरः विषैले तालाब के पास जिसका पानी पीकर उसके चोरों भाई मृत पडे थे।

10 यक्ष का पहला प्रशन क्या था?
उत्तरः मनुष्य का साथ कौन देता है?

पाठ 9 चिड़िया की बच्ची

लेखकःजैनेंद्र कुमार

1 संगमरमर- एक चिकना चमकीला पत्थर

2 व्यसन -बुरी आदत

3 हौज-पानी का बड़ा सा बर्तन

4 विनोद- हँसी -खुशी की बाते

5 सटक -नली

6 रागनी- एक प्रकार का गीत

7 झालर - सुंदरता बढ़ने का साधन

8 मढ़कर -जड़कर

9 ढाढ़स - तसल्ली

10 चौकन्ना- सजग, चौकन्ना

11 सुबकना- हिचकियोंमेंरोना

12 जतन- उपाय

13 चित्त -मन

14 देह -शरीर

15 वरदान- इच्छा पूरी करने वाला

अतिलघु प्रश्न

1 माधवदास कौन थे?

उत्तरः माधवदास धनी व्यक्ति थे, जिनके पास खूब पैसा था।। जिसके सामने एक संगमरमर की कोठी थी जिसके सामने एक सुंदर बगीचा था।

2चिड़िया कहाँ बैठी वह किस समय आई?

उत्तरः चिड़िया बगीचे में लगे गुलाब की डाली पर शाम के समय आई।

3 चिड़िया ने बगीचे मे आने का क्या कारण बताया?

उत्तरःचिड़िया ने कहा कि मैं पल भर साँस लेने को आई थी ,अब मैं हा रही हूँ।

4 चिड़िया को हर हाल में अपनी माँ के पास क्यों जाना चाहती थी?

उत्तरःचिड़िया को अपनी स्वतंत्रता के साथ अपनी माँ बहुत प्रिय थी।उसे माधवदास दवारा दी गई सुविधा से अधिक अपना परिवार और घोंसला प्यारा है।

लघू प्रश्न

1माधवदास के बगीचे में आ बैठी चिड़िया कैसी लगी? उन्होंने चिड़िया से क्या कहा?

उत्तरःसायंकाल माधवदास के बगीचे मे आ बैठी चिड़िया बहुत सुंदर थी। उसकी लाल गर्दन गुलाबी होते -होते किनारों से जरा सी नीली पड गई थी उसका छोटा सा सिर बहुत प्यारा था।

2 माधवदास चाहता था कि चिड़िया उसके महल में रहे पर चिड़िया न उन्हें क्या जवाब दिया?

उत्तरः चिड़िया ने कहा कि वह अपनी माँ के पास जा रही है। सूरज की धूप खाने और हवा से खेलने और फूलो से बाते करने वह जरा घर से उड़ आई थी। अब शाम हो गई है और वह अपनी माँ के पास जा रही है।

3 माधवदास ने चिड़िया से क्या कहा?

अपना सब कुछ भूल गए। उन्होंने उससे कहा कि यह बगीचा तुम्हारा है तम यहाँ बिना डर के आया करो।

दीर्घ उत्तर

1 माधवदास अपना खाली समय किस तरह बिताया करते थे? माधवदास की शामें कैसी बीतती थी?संगमरमर की

उत्तरः माधवदस धनी आदमी थे, जिनके पास फुरसत का पर्याप्त समय था। शाम के समय वे अपनी नई संगमरमर की कोठी के सामने बने चबूतरे पर तख्त डलवाकर मसनद के सहारे गलीचे पर बैठ जाया करते थे।यहाँ से वे अपने सुंदर बगीचे को देखा करते थे। फव्वारों को देखा करते बताते। अपने मित्रा के साथ गप्पे मारा करते थे।

2चिड़िया को अपने पास रोकने के लिए माधचदास ने छल-बल के कौन-कोन से उपाय अपनाए?

उत्तरः चिड़िया को अपने पास रोकन के लिए माधवदास ने छल-बल के अनेक उपाय किए। उन्होंने चिडिया को सबसे अपने बगीचे और महल की सुंदरता से ललचना चाहा। फिर उन्होंने अपनी प्रतिष्ठा का रोब डालते हुए।धन दौलत की प्रचुरता बताते हुए उसे मालामाल करने का लालच दिया।इसके बावजूद काम न

बनता देख उसने चिडिया की प्रशंसा की। अंत मे उसने छल से चिदिया को पकड़वाना चाहा।

व्याकरण

अनेकार्थी शब्द

हिन्दी भाषा में बहुत से ऐसे शब्द है जिसके एक से अधिक अर्थ होते है, ऐसे सभी शब्दों को अनेकार्थी शब्द कहतेहैं।अनेकार्थी का अर्थ है ळ एक से अधिक अर्थ देने वाला ।दूसरे शब्दों में अलगळअलगअर्थ में अनेकार्थी शब्द का प्रयोग करने पर दूसरा अर्थ आ जाता है।जैसे ळ कनक शब्द सोना, धतूरा, गेंहू के अर्थ में प्रयोग होता है।

अंबर ळ बादल, वस्त्र, कपास, अभ्रक, आकाश।

अंक ळ अध्याय, चिन्ह, गोद, संस्करण, आलिंगन।

अन्तर ळ अन्तःकरण, अवसर, भिन्नता, छिद्र, आकाश, अवधि।

अंग ळ अंश, देह, पार्श्व, सहायक, अवयव।

अंबक ळ पिता, आँख, ताँबा।

अंब ळ माता, दुर्गा, आमकावृक्ष।

अर्य ळ अभिप्राय, धन, ऐश्वर्य, प्रयोजन।

अधर ळ तुच्छ, ओठ, अन्तरिक्ष।

अतिथि ळ अपरिचित, मेहमान, अग्नि, संन्यासी

कनक ळ गेहूँ, धतूरा, सोना, नागकेसर, पलास, खजूर।

कलि ळ शिव, युद्ध, एक, दुःख, वीर, विवाद, युग, पाप।

कक्ष ळ श्रेणी, कमरा, सूखीघास, कांख, कमरबन्द, जंगल, काँस, कंछोटा।

कशिपु ळ कपड़ा, तकिया, अन्न, प्रहलादकेपिता, आसन, बिछौना, भात।

खर ळ तीक्ष्ण, तिनका, गधा।

खचर ळ पक्षी, ग्रह, देवता।

गण ळ मनुष्य, तीनवर्णोंकासमूह &छन्दशास्त्रज्ञ, भूत–प्रेत।

गति ळ हाल, चाल, मोक्ष, दशा।

ग्रहण ळ चन्द्रयासूर्यग्रहण, लेना, पकड़ा।

गुण ळ विशेषता, स्वभाव, रस्सी, सततथातमोगुण, कौशल, लक्षण, हुनर, रज, प्रभाव।

गुरु ळ अध्यापक, छन्दमेंदीर्घवर्ण, बृहस्पति, भारी, श्रेष्ठ, बड़ा।

निबंध

कबूतर

कबूतर एक बहुत ही सुंदर पक्षी है और यह पूरे विश्व में पाया जाता है। यह लोगों के द्वारा प्राचीन काल से ही पालतू पक्षी के रूप में प्रयोग किया जाता है। कबूतर विभिन्न प्रकार के और तरह तरह के रंग में पाए जाते हैं। यह सफेद स्लेटी और भूरे रंग में पाए जाते हैं। भारत में केवल स्फेद और स्लेटी कबुतर पाए जाते हैं। सफेद कबूतर घरों में पाले जाते हैं जबकि स्लेटी और भूरे कबूतर जंगलों में पाए जाते हैं। कबूतर का पूरा शरीर पंखो से ढका होता है और यह ब्ना रूके काफी देर तक उड़ सकते हैं। कबूतर के पास एक चोंच होती है और इसके पंजे ज्यादा नुकीले नहीं होते हैं। इनके पंजो की बनावट इस तरह होती है कि यह आसानी से पेड़ की शाखाओं को मजबूती से पकड़ सकते हैं।

कबूतर बहुत ही शांत स्वभाव के होते हैं और इन्हें प्राचीन काल में जब संचार का कोई माध्यम नहीं था तो संदेश देने के लिए भेजा जाता था और उन कबुतरों को जंगी कबुतर का नाम दिया जाता था। इन्हें शांति का प्रतीक माना जाता है। कबूतर बहुत ही बुद्धधिमान पक्षी होता है। यह अपना रहने का स्थान ऊँची ईमारतों और ऐताहिसिक ईमारतों के ऊपर बनाते हैं। कबुतर की जंगल में आयु घ वर्ष होती है। ज्यादातर कबूतर शाकाहारी होते हैं। वह अनाज, बाजरे के दाने और फल आदि खाते हैं। इनकी याद्दाश्त बहुत अच्छी होती है। यह मिलों का सफर तय करके वापिस उसी राह से दोबारा अपने स्थान पर जा सकते हैं। कबूतर अपनी सुंदरता के कारण राजा महाराजाओं के महलों में भी रहते हैं। कबूतर को अच्छे भाग्य का प्रतीक भी माना जाता है। कबूतर त्रए-घए किलोमीटर प्रति घंटे की रफ्तार से दौड़ते हैं।

कबूतर अपने आप को शीशे में देखकर पहचान लेते हैं और प्रतिबिंब को देखकर धोखा नहीं खाते हैं। कबुतर किसी भी व्यक्ति को नहीं भूलते हैं और दोबारा दिखने पर उन्हें पहचान लेते हैं। कबुतरों को समूह में रहना पसंद होता है और साथ ही इन्हें इंसानों के साथ रहना भी अच्छा लगता है। कबूतर पूरे जीवन एक ही जोड़ा बनाकर रखते हैं। यह एक समय में ध अंडे देते हैं। त्रक्ष-धए दिन में चूजे अंडे से बाहर आ जाते हैं और अंडो को नर और मादा दोनों सेकते हैं। कबुतर स्वभाव से मिलनसार होते हैं। कबुतर की देखने और सुनने की क्षमता अद्भुत होती है। वह भूकंप और तुफान की आवाजें आसानी से सुन लेते हैं।

स्वाध्याय :विविध पक्षियों के नाम लिखकर चिड़िया के बारे में लिखिए।

गतिविधि :पक्षियों के आवास (घर) बनाकर लाइए

पाठ 10 अपूर्व अनुभव
लेखक :त्त्सुको कुरियानगी

1 सभागार- बड़ा सा कमरा

2 शिविर- कैंप

3 द्विशाखा- पेड़ के तने से फूटी टहनी वाली जगह

4 शिष्टता- विनम्रता

5 हताशा- निराशा

6 तिपाई- तीन पैरों वाला स्टूल

7 रमा होगा- लगा होगा

8 समा पाना- अंदर आ जाना

9श्लक- दृश्य

10 लुभावनी-लुभाने वाली

अतिलघू प्रश्नोत्तर

1 यासुकी चान कौन था?-

उत्तरः यासुकी चान तोमोए (जापान) में रहने वाला एक बालक था, जो पोलियों से पीड़ित था।

2 यासुकी चान को किसने निमंत्रण दिया?

उत्तरः तोतो चान ने निमंत्रण दिया था जो उससे एक साल छोटी थी।

3 तोमोए में पेड़ से जुड़ी कोन सी परंपरा है?

उत्तरः यहाँ हर एक बच्चा अपने लिए पेड़ को चुनता था और उसी पेड़ पर चढ़ता है।

4 यासुकी -चान, तोतो -चान से कहाँ मिला?

उत्तरः स्कूल के पास वाले मैदान में क्यारियों के पास मिला।

लघु प्रश्न

1 तोमोए में दूसरे पेड़ पर चढ़ने से पहले अनुमति क्यों ली जाती है?

उत्तरः तोमोए में प्रत्येक बालक एक पेड़ को अपनाता हैऔर उसे निजी संपति मानता है।वहाँ कोई बालक जब किसी दूसरे के पेड़ पे चढ़ता है, तो पहले उससे शिष्टता पूर्वक पूछता है, "माफ कीजिए, क्या मैं अंदर आ जाऊँ?

2 तोतो-चान ने अपनी किस योजना से अपने माता-पिता को अनजान रखा और क्यो?

उत्तरः तोतो-चान अपने पोलियोग्रस्त मित्र यासुकी -चान को अपने पेड़ पर चढाना चाहती थी। यासुकी चान इस योजना से उसने अपने माता-पिता को अनजान रखा,क्योंकि तोतो-चान जो ठीक से चल नहीं पाता था उसे पेड़ पर चढ़ाना खतरे से खाली नही था।

'व्यायाम'पर एक अनुच्छेद लिखिए-

मानव शरीर एक मशीन की तरह है । जिस तरह एक मशीन को काम में न लाने पर वह ठप पड़ जाती है, उसी तरह यदि शमा जा भी उचित संचालन न किया जाए तो उसमें कई तरह के विकार आने लगते हैं । व्यायाम शरीर के संचालन का एक अच्छा तरीका है । यह शरीर को उचित दशा में रखने में मदद करता है । व्यायाम के लिए अनेक प्रकार की विधियाँ काम में लाई जाती है । कुछ लोग दौड़ लगाते हैं तो कुछ दंड-बैठक करते हैं । बच्चे खेल-कूद कर अपना व्यायाम करते हैं । बुजुर्ग सुबह-शाम तेज चाल से टहलकर अपना व्यायाम करते है । साईकिल चलाना, तैरना, बाग-बगीचों में जाकर उछल-कूद करना आदि व्यायाम की अन्य विधियाँ हैं । नवयुवकों में व्यायामशालाओं में जाकर व्यायाम करने की प्रवृति पाई जाती है । व्यायाम चाहे किसी भी प्रकार का हो, इससे हमें बहुत लाभ होता है । शरीर में ताजगी आती है तथा

यह सुगठित बन जाता है । प्रत्येक व्यक्ति को कुछ न कुछ व्यायाम अवश्य करना चाहिए।

स्वाध्यायः विकलांग व्यक्तियों के बारे में सात वाक्य लिखिए-

गतिविधिः विकलांग व्यक्तियों का चित्र चिपकाइए तथा हम उनकी की प्रकार मदद कर सकते है ? लिखिए-